इकाई 5 धर्म एवं संस्कृति : चीन और जापान

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 प्राचीन चीन में धर्म

5.3 विभिन्न विचारधाराएँ

- 5.3.1 कन्फ्यूशियसवाद
- 5.3.2 ताओवाद तथा अन्य सम्प्रदाय
- 5.3.3 बौद्ध मत

5.4 मध्यकाल

- 5.4.1 नव-कन्फ्यूशियस मत
- 5.4.2 मंगोलों के अधीन धर्म

5.5 मिंग-चिंग काल

5.6 धर्म एवं विद्रोह

5.7 जापान का प्राचीन धर्म एवं संस्कृति

- 5.7.1 स्वदेशी आधार
- 5.7.2 बौद्ध धर्म
- 5.7.3 कुलीन संस्कृति

5.8 मध्यकालीन धर्म एवं संस्कृति

- 5.8.1 धर्मों का विकास
- 5.8.2 योद्धा संस्कृति का निर्माण

5.9 तोकुगावा काल में धर्म एवं संस्कृति

- 5.9.1 विचारों के प्रतिमान
- 5.9.2 शहरी संस्कृति का उदय

5.10 सारांश

5.11 शब्दावली

5.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपको :

- प्राचीन चीन एवं जापान के प्रमुख धर्मों तथा धार्मिक विचारों की जानकारी हो सकेगी ;
- मध्यकाल एवं प्रारंभिक आधुनिक काल के चीन तथा जापान के धर्मों तथा संस्कृतियों का ज्ञान हो सकेगा ; और
- उन सामाजिक वर्गों का ज्ञान हो सकेगा, जिन्होंने दार्शनिक व्यवस्थाओं का निर्माण किया।

5.1 प्रस्तावना

इस इकाई में आपका परिचय चीन तथा जापान में आधुनिक काल तक हुए धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों से कराने का प्रयास किया गया है। इन दोनों ही देशों के सामाजिक विकास में धर्म एवं संस्कृति ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में चीन में कई धर्मों तथा मिश्रित संस्कृति का अस्तित्व है। प्रारंभिक समय से आज तक चीन के अस्तित्व को कई मौलिक कारकों ने प्रभावित किया है। हम यह परीक्षण करेंगे कि क्या चीन ने संस्कृति एवं धर्म के माध्यम से अपनी पहचान को बनाए रखा या फिर इसमें विदेशी प्रभाव, युद्ध या

विजय से सुधार हुआ। इस इकाई का प्रारंभ प्राचीन काल के धर्म एवं संस्कृति के संक्षिप्त विवरण से हुआ है। इस इकाई में ताओवाद तथा कन्फ्यूशियसवाद जैसी बहुत-सी विचार-धाराओं का विवरण किया गया है। इससे आगे मध्यकाल में बौद्ध धर्म के प्रभाव, कुलीन संस्कृति के विकास, कला, साहित्य एवं बौद्धिक विकास का विवरण किया गया है। यह इकाई प्रारंभिक आधुनिक काल के दौरान नव-कन्फ्यूशियसवाद के उद्भव एवं सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों पर पड़े इसके प्रभाव पर भी प्रकाश डालती है।

जापान के धर्म तथा संस्कृति की एक विशिष्ट विशेषता यह थी कि शिंतो, बौद्ध तथा कन्फ्यूशियस धर्मों का सौहार्दपूर्ण अस्तित्व बना रहा तथा इनके बीच अपेक्षाकृत कम तनाव था। लेकिन धार्मिक व्यवस्था तथा संस्कृति के संवाहक के रूप में बौद्ध धर्म के महत्त्व को कम करके नहीं देखा जा सकता।

जापानी संस्कृति जिन सौंदर्य सिद्धान्तों के इर्द-गिर्द घूमती रहती है उनके द्वारा प्रकृति एवं सम्मोहन पर बल देते हुए निरंतरता को बनाए रखा गया है। ये सिद्धांत साहित्य, कला, बागवानी के साथ-साथ हस्तकला से आंतरिक तौर पर जुड़े हैं और ये सिद्धांत अपने धार्मिक दार्शनिकीय विचारों के द्वारा उत्पन्न हुए हैं।

इस इकाई के द्वारा इन विचारों की वृद्धि, सम्पन्नता तथा इनके द्वारा जीवन के विभिन्न आयामों पर डाले गये प्रभाव पर विचार किया गया है। इससे जापानी संस्कृति के प्रभाव को जानने में मदद मिलती है। तथा विश्व संस्कृति में जापानी संस्कृति के योगदान के बारे में पता चलता है। इस इकाई से हमें यह भी पता चलता है कि जापानी संस्कृति अपने पड़ोसी चीन की नकल मात्र ही नहीं थी।

जहां एक ओर जापान की प्राचीन, मध्यकालीन तथा पूर्व आधुनिक काल की संस्कृति का विवरण किया गया है, वहीं पर इस इकाई में जापान की शहरी संस्कृति के विकास पर भी प्रकाश डाला गया है। हम सबसे पहले चीन के प्राचीन धर्म पर प्रकाश डालेंगे।

5.2 प्राचीन चीन में धर्म

प्राचीन समय के चीनी धर्म की प्रकृति एवं वस्तुनिष्ठता के विषय में भिन्न प्रकार के विचार तथा मत हैं। कुछ ने प्रारम्भिक धर्म को अद्वैतवाद कहकर वर्णित किया और आगे चलकर यह बहुदेववाद में परिवर्तित हो गया। कुछ दूसरे विद्वानों का कहना है कि यह एक ऐसा प्राचीन धर्म था, जिसके अंतर्गत पूर्वजों, प्रकृति स्वर्ग एवं पृथ्वी की आराधना को शामिल कर लिया गया था।

जिन ऐतिहासिक कहानियों एवं परंपराओं में कबीलाई समूहों का उल्लेख किया गया है उन्होंने देवताओं, ईश्वर के पुत्रों या कबीलाई सरकारों के स्तरों को खूब बढ़ाया। इस श्रेणी में वे सरदार आते थे, जिन्होंने अपने-अपने कबीलों के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण योगदान किया था। इस संदर्भ में जितया कबीलों के सरदार ताइताइ का उल्लेख किया जा सकता है। ताइताइ ने फेंशुई नदी पर एक जलाशय का निर्माण किया था। इसी कारणवश उसको फेंशुई का देवता माना जाने लगा और उसको लोगों के द्वारा बलि अर्पित की जाने लगी। इस तरह के अन्य कई उदाहरणों का उल्लेख किया जा सकता है। गोंगोंग कबीले के यू, चाऊ कबीले के चि आदि का इस संदर्भ में उल्लेख हुआ है। यहां पर महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि ऐसी पौराणिक कथाओं में सरदारों की आध्यात्मिक शक्ति को इस कारणवश निरोपित किया गया क्योंकि उन्होंने जल एकत्रण, बाढ़ नियंत्रण या फिर कृषि एवं पशु-पालन जैसे कार्यों में योगदान किया।

चीन के सबसे प्रारंभिक लिखित इतिहास में तांग (16वीं सदी ई. पूर्व से 11वीं सदी ई.पू. तक) तथा चाऊ (11वीं सदी ई.पू. से 8 सदी ई.पू.) वंशों का विवरण किया गया है। इन दोनों वंशों के शासनकाल में दासप्रथा वाले समाज विद्यमान थे और हम इस काल के धर्म एवं धर्म परंपराओं का अनुमान लगा सकते हैं।

(1) तांग : तांग राजा अपनी वंशावली का प्रारंभ उस राजा से मानते थे जो ईश्वर का पुत्र था और उसके आदेशों पर ही ईस वंश का निर्माण किया गया। इस तरह सबसे प्रारंभिक पूर्वज सर्वशक्तिमान ईश्वर को ही माना गया। यह राजतंत्र की उत्पत्ति का दैवी सिद्धान्त था। इससे यह विश्वास किया गया कि राजा का जन्म जनता पर शासन करने के लिये हुआ था और मृत्यु के बाद वे मृत लोगों पर शासन करते। मातृ सत्ता को काफी महत्त्व दिया जाता था क्योंकि माताओं तथा दादी माताओं को विशेष बाले अर्पित करने के उदाहरण हमें मिलते हैं। सभी प्रकार के आडंबर विद्यमान थे और तांग कुलीनों का विचार था कि सभी वस्तुओं पर ईश्वर का नियंत्रण था। दैवी इच्छा को देववाणियों के द्वारा खोजा जा सकता था। देववाणियों के हड्डियों पर उल्लिखित बहुत से ऐसे अभिलेख पाए गए हैं जो अच्छाई या बुराई के विषय में देवताओं की इच्छानुरूप हैं।

(2) चाऊ (Chou) : जैसा कि पहले उल्लिखित किया गया है, चाऊ एक प्राचीन कबीला था और उनके पूर्वज चि की पूजा कृषि के देवता के रूप में की जाती थी। उनके राजा वू ने वंशीय शासन की आधारशिला रखी और चाऊ राज्य चीन के व्यापक भूभाग पर भली-भांति से संगठित था। चाऊ ने भी शासन करने का अधिकार स्वर्ग से प्राप्त किया था और अपने पूर्वज देवता की पहचान सर्वशक्तिमान ईश्वर के साथ की। यह तथ्य बड़ा ही रुचिकर है कि चाऊ शासकों ने तांग को ईश्वर के बड़े पुत्र के रूप में उद्धृत किया जिसने सर्वोच्च ईश्वर की आशाओं को पूरा नहीं किया। इसी कारण सर्वोच्च देवता ने शासन अपने छोटे पुत्र चाऊ को सौंप दिया। दैवी इच्छा को धारण करते हुए चाऊ को मानव विश्व पर शासन करने का आदेश प्राप्त हो गया। यद्यपि यह स्वर्गीय आदेश कोई स्थायी आदेश न था। यह तभी तक लागू था जब तक वह स्वर्ग के द्वारा नियमानुसार निर्धारित कार्य करता था। वास्तव में शासन करने के स्वर्ग से प्राप्त इस आदेश (*ताइन*) ने चीन की राजनीति में व्यापक भूमिका अदा की। शासन के साथ-साथ जनता ने इस आदेश को अपने-अपने हितों के अनुरूप व्याख्या की। इस संदर्भ में आगामी काल में होने वाले उन किसान विद्रोहों को उद्धृत किया जा सकता है जिन्होंने अपने वैचारिक सार को इस उक्ति से प्राप्त किया कि *ताइन* को वापस ले लिया गया था। इन दोनों वंशों के शासन काल में राजनीतिक प्रभुत्व को धर्म के माध्यम से वैधता प्रदान की गई। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि चाऊ का सर्वोच्च देव तांग के देव की अपेक्षा कम निरंकुश था। इस धर्म के गर्भ से राजनीतिक तथा सामाजिक आधार एवं व्यवहार से ऐसे कुछ निश्चित मानक उत्पन्न हुए कि जिन्होंने आगे चलकर एक सुनिश्चित स्वरूप को ग्रहण कर लिया।

इस काल के दौरान कई क्लासिकल रचनाओं को लिखा गया। इन पुस्तकों को बांस की पट्टियों या रेशम पर लिखा गया। इन क्लासिकल ग्रंथों का चीन के समाज एवं संस्कृति पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इन रचनाओं में निम्नलिखित पांच ग्रंथ काफी प्रसिद्ध हैं :

शिह चिंग : (काव्य पुस्तक) इसमें 74 लघु गीत, 31 बृहद् गीत तथा 31 बलि गीत समाहित हैं। इनको चाऊ शासन के दौरान लिखा गया था। ये विशेष प्रकार की घटनाओं से जुड़े हैं तथा ईश्वर को समर्पित हैं।

शू-चिंग : (इतिहास की पुस्तक) यह पुस्तक राजनीतिक तथ्यों का संग्रह है।

आई चिंग : (परिवर्तनों की पुस्तक) यह पुस्तक भविष्यवाणियों से संबंधित है।

लि चि : (अनुष्ठान पुस्तक) इस पुस्तक में अनुष्ठानों की सूची है।

चुन चिन : इस पुस्तक में बसंत और शरद ऋतुओं का विवरण है और इसके अंदर ऐतिहासिक तिथिक्रम का महत्त्व है।

आगे चलकर ये सभी रचनाएं कन्फ्यूशियस ग्रंथों के रूप में प्रसिद्ध हुईं। स्वयं कन्फ्यूशियस इन ग्रंथों के पुनर्लेखन, संपादन या संशोधन से जुड़ा था। आगामी भागों में हम कन्फ्यूशियस के विषय में विवेचन करेंगे।

बोध प्रश्न 1

1) प्राचीन काल के चीन में धर्म की प्रकृति एवं उद्देश्यों के विषय में 15 पंक्तियों में विवेचना कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) पाँच ग्रंथों के विषय में एक संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

5.3 विभिन्न विचारधाराएँ

प्राचीन काल में चीन के दार्शनिक विचारों ने व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने की अपेक्षा समाज की जरूरतों को अधिक पूरा किया। इस समय में उत्पन्न हुए अधिकतर विचारक नवोदित नौकरशाही तथा जटिल राजनीतिक व्यवस्था की उत्पत्ति थे और वे मुख्यतः राजनीतिकों के समूह से आते थे। आगे चलकर इन राजनीतिक विचारकों ने अपने आधार को स्थापित कर अपने समर्थकों के गुट बना लिए और वे उपदेशक हो गए। धीरे-धीरे उनके शिष्यों ने विभिन्न विचारधाराओं को स्थापित किया। इन विचारधाराओं में से हम मुख्यतौर पर कन्फ्यूशियसवाद, ताओवाद तथा कुछ अन्य मतों पर विचार करेंगे।

5.3.1 कन्फ्यूशियसवाद

कन्फ्यूशियसवाद मुख्यतः पश्चिमी नाम है, लेकिन चीनी किंग शियाओ या "कन्फ्यूशियस उपदेश" के बारे में बात करते हैं। चीनियों के द्वारा इसे सामान्य तौर पर जू शियाओ या "विद्वानों के उपदेश" कहा जाता है। कन्फ्यूशियस कब अस्तित्व में आया—इसको लेकर विवाद है। किन्तु चीनी उसके जन्म का समय 551 ई. पू. को मानते हैं तथा वह 479 ई. पू. तक जीवित रहा। उसने एक छोटे अधिकारी के रूप में कई कार्यों को किया। जैसे कि उसने गोदाम प्रबन्धन, अध्यापन, अपराध के लिये दंड देने वाले तथा सामाजिक कानून-व्यवस्था को बनाए रखने के अधिकारी के रूप में कार्य किया। जैसा कि पहले भी कहा गया कि वह कई साहित्यिक रचनाओं के साथ भी संबंधित था। उसके उपदेशों को कन्फ्यूशियस विद्वता के नाम से जाना जाता था और आगे चलकर उसके यही उपदेश कन्फ्यूशियस सम्प्रदाय में परिवर्तित हो गए। उसको इस संप्रदाय का सबसे पड़ा प्रवर्तक माना गया किन्तु अन्य कई उपदेशकों एवं विद्वानों ने भी इसको विकसित करने में विशेष भूमिका अदा की। ताओवाद तथा बौद्ध धर्म से अलग हटकर कन्फ्यूशियस मत को धार्मिक अनुष्ठानों का मुख्य संवाहक माना गया और इसका उद्‌भव चाओ वंश के शासन काल में या इससे कुछ पहले हुआ। कन्फ्यूशियस ने अपने विचारों का प्रचार करने के लिए व्यापक यात्रा की और अपने शिष्य बनाए। उसकी मृत्यु के बाद उसके शिष्यों ने उसके उपदेशों को *दि ऐनालेक्टस* नाम की पुस्तक में संकलित किया।

उससे उपदेशों का मुख्य लक्ष्य अपने शिष्यों को राजनीति में प्रवेश प्राप्त करने हेतु आवश्यक निपुणता प्रदान करना था। कन्फ्यूशियस के उपदेश कुलीनों की अधिकारिक शिक्षाओं के विरोधी थी। उदाहरण के तौर पर उसका यह मानना था कि प्रकृति से सभी मनुष्य समान थे, किन्तु उसका यह मानना उस काल में प्रचलित दास प्रथा के विपरीत जाता था। उसका यह भी कहना था कि अच्छे एवं योग्य लोगों को ही अधिकारिक पदों पर नियुक्त किया जाना चाहिए और उसका यह तर्क उत्तराधिकार के नियमों के विपरीत था।

चीन के साम्यवादी इतिहासकारों ने चीन के सांस्कृतिक इतिहास में कन्फ्यूशियस के योगदान को महत्त्वपूर्ण तो माना, परन्तु इसको उन्होंने क्रांतिकारी की अपेक्षा सुधारवादी समझा। इस कथन के समर्थन में "इन इतिहासकारों ने निम्नलिखित तर्कों को दिया :

- उसके विचार अपनी ही तार्किक परिणति तक नहीं पहुँचते ;
- एक शिक्षक के रूप में उसने लोगों को शिक्षित करना चाहा, किन्तु उसकी शिक्षा कुलीनों तक ही पहुंच सकी ;
- उसने कुलीन वर्ग के पदानुक्रम का समर्थन किया और अधिकारिक उत्तराधिकारी व्यवस्था का विरोध नहीं किया ;
- समस्याओं का समाधान करने के लिए उसने नवीन विचारों का प्रयोग करने की अपेक्षा पुरानी मान्यताओं के आधार पर ही पुराने विचारों को ही पुनर्गठित किया।

यद्यपि उसको "राजनीतिक अनुदारवादी कहकर उद्धृत किया गया है, लेकिन उन्होंने यह स्वीकार किया है कि "उसने इतिहास के प्रवाह के विरुद्ध कार्य किया।"

हमें यहां पर यह याद रखना चाहिए कि कन्फ्यूशियसवाद कभी भी अतिवादी नहीं हुआ। बल्कि इसने समझौतावादी प्रतिमानों को स्थापित किया अर्थात् इसने मध्य मार्ग का अनुसरण किया। इस तरह कन्फ्यूशियसवाद ने उदित होते राज्य, शासक गुटों तथा नौकरशाही के साथ-साथ उनकी राजनीतिक आवश्यकताओं के आधार पर एक दर्शन को उपलब्ध कराया।

इस तरह से कन्फ्यूशियसवाद शासक गुटों के बीच लोकप्रिय हो गया। समय के चलते यह राज्य सम्प्रदाय बन गया। कन्फ्यूशियसवाद एक परिवर्तनीय दर्शन था। समय-समय पर इसमें परिवर्तन होते रहे। राज्य द्वारा लागू किए गए कन्फ्यूशियसवादी सिद्धांत के अनुसार, सम्राट राष्ट्र का राजनीतिक अध्यक्ष होने के साथ-साथ धार्मिक मुखिया भी था। उनका विश्वास था कि सम्राट संपूर्ण विश्व का भाग होने के कारण न केवल मानव जाति पर शासन करने के लिये आया बल्कि उसको धार्मिक कार्यों को भी पूरा करना था। वह *ताइन* (स्वर्ग) का पुत्र था और वह स्वर्ग तथा पृथ्वी का सहायक था। सदियों तक कन्फ्यूशियसवादी विद्वानों के बीच *ताइन* के अस्तित्व को लेकर मतभेद बने रहे, लेकिन उनमें से अधिकतर का यह विश्वास था कि सर्वशक्तिमान मनुष्य में अच्छाई का पक्ष लेता है, इसलिए सभी को धार्मिक संस्कारों को पूरा करना चाहिए। प्रदेशों में सरकारी पदों पर आसीन अधिकारियों को धार्मिक संस्कारों को पूरा करने का कार्य सौंपा गया। स्थानीय पर्वतों तथा जल-स्रोतों की आत्मा को बलि प्रदान करने की उनसे आशा की जाती थी। वे कन्फ्यूशियस मंदिरों तथा नगर देवता के मंदिरों में आयोजित होने वाले धार्मिक उत्सवों में भी भाग लेते थे। पूर्वजों का सम्मान करना कन्फ्यूशियस मत की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता थी । अतीत के जीवन के लिये तथा मृत के लिए होने वाले अनुष्ठानों में ऐसी अवधारणाओं ने स्थान ग्रहण किया जो कन्फ्यूशियस परंपराओं तथा विचारों से भिन्न थीं। इसके विकास में बौद्ध मत तथा ताओ मत का अधिक गहरा प्रभाव पड़ा था। लोकप्रिय अंधविश्वास तथा सर्वात्मवाद ने व्यापक योगदान किया। अन्य किसी कारण की अपेक्षा संभवतः यह कन्फ्यूशियस मत का ही प्रभाव था कि चीन में मृत महाकार का संभवतः इतना अधिक प्रचार था। दर्शन के तौर पर कन्फ्यूशियस मत की जड़ें चीन में काफी गहरी थीं और इसको जीवन-शैली के रूप में ग्रहण किया गया।

5.3.2 ताओवाद तथा अन्य सम्प्रदाय

जिस अन्य विचारधारा ने प्राचीन काल में दार्शनिक विश्वास को प्रभावित किया, वह ताओ मत था। जिन दार्शनिकों ने ताओवाद का प्रचार किया उनका बढ़ते युद्ध एवं निरंकुशता से मोहभंग हो गया था। इस तरह से यह मत निरंकुश शासकों के विरुद्ध था। यह ऐसी प्रवृत्तियों का समर्थक था जो प्रकृति के संतुलन को बनाए रखना चाहती थी। उन्होंने अपने समय के सामंती समाज पर आक्रमण किया। अपने पिछड़ेपन के कारण ताओ मत ने इस विश्वास के साथ सभी प्रकार के ज्ञान पर हमला किया कि ज्ञान मानव समाज को भ्रष्ट बना सकता है। वास्तव में आगे चलकर इसने सभी प्रकार के सामाजिक उत्थान का विरोध किया। उदाहरण के लिए इस मत के विचारक उस किसान की अधिक प्रशंसा करेंगे जिसको रहट का ज्ञान है किन्तु वह पानी को अपनी पीठ पर ले जाता है। ताओ मत के मुख्य स्रोत लाओ-रन्जू तथा ताओ-तेशिंग ग्रंथ थे, लेकिन इन ग्रंथों के लेखकों के नाम ज्ञात नहीं हैं। ताओ मत का संस्थापक संभवतः ली एर था।

ताओवाद चीन में मुख्य धर्म तो न बन सका, फिर भी इसने मानव तथा प्रकृति के बीच के जिस संबंध पर बल दिया उसने समाज में सौंदर्यबोध को प्रभावित किया। तांग शासनकाल में ताओ मत का समर्थन राज्य ने किया और जिसके निम्नलिखित परिणाम हुए :

- ली एर की स्मृति में बहुत से मंदिरों का निर्माण किया गया तथा ली एर को संपूर्ण स्वर्गों के सर्वोच्च सम्राट की उपाधि प्रदान की गई।

• शाही महलों में ताओ मत के पुजारियों की काफी संख्या थी; और

• साम्राज्यिकी परीक्षा के लिए ताओ मत के विचारों को भी पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया गया।

इन सबके बावजूद भी ताओ मत कन्फ्यूशियसवाद या बौद्ध धर्म की तरह लोकप्रिय न हो सका।

अन्य प्रभावशाली सम्प्रदाय मोहवाद था और इसका नाम इसके संस्थापक मो-त्सू के नाम पर रखा गया था। इस मत ने संस्कारों पर कोई बल न दिया और सर्वव्यापी प्रेम का प्रचार किया। इसका मानना था कि आदमी को दूसरे लोगों का, अपने परिवार और देश का सम्मान करना चाहिए। मो-त्सू का यह विश्वास था कि अच्छाई का परिणाम अच्छा ही होता है और बुराई के लिए स्वर्ग एवं देवताओं के द्वारा दंड दिया जाता है। ऐसा लोगों के व्यवहार को ध्यान में रखकर किया गया। यदि शासक स्वर्ग की इच्छा की स्तुति करते हैं तब "भूख से मरने वालों के पास भोजन होगा, ठंड से ठिठुर रहे लोगों के पास कपड़ा होगा तथा मेहनतकश लोग आराम कर सकेंगे।"

मो-त्सू ने कुलीन वर्ग की पैतृक सम्पत्ति का विरोध किया। उसने सरकारी पदों पर नियुक्ति के लिये योग्यता के आधार का भी समर्थन किया।

372-289 ई.पू. के बीच मैनसियस एक अन्य महत्त्वपूर्ण विचारक था और उसने दयालुता की कन्फ्यूशियसवादी अवधारणा को और आगे बढ़ाया। उसके विचार में प्रकृति से हर कोई अच्छा था और इस तरह जन्म के समय की अच्छाई को और अधिक विकसित किया जा सकता था। अन्य विचारकों की भाति ही मैनसियस ने भी अपने आर्थिक एवं राजनीतिक विचारों को एक साथ जोड़ा। इस संबंध में निम्नलिखित उदाहरणों को प्रस्तुत किया जा सकता है :

- उसका कहना था कि जन समर्थन ही शासक का प्रमुख आधार था और जिसे जन समर्थन प्राप्त नहीं हो वह राजा न होकर एक दुराचारी होगा।
- दुराचारी शासक को अपराधी ठहराया जाना चाहिए और जो राजा राज्य को हानि पहुंचाता हो, उसे हटा देना चाहिए।

आर्थिक क्षेत्र में उसने परिवार की आत्म-निर्भरता और अचल सम्पत्ति पर बल दिया। आठ सदस्यों वाले परिवार के पास 100 एम. एम. भूमि हो, वह खाने के लिए पर्याप्त भोजन उगाए, परन्तु पशुओं में वृद्धि करे तथा रेशम का उत्पादन करने के लिए शहतूत के पेड़ों का उत्पादन करे।

यहां पर उन सभी विचारकों के विषय मे लिख पाना संभव न होगा, जिन्होंने चीनी मानस पर कोई न कोई प्रभाव डाला हो। लेकिन प्राचीन काल के विचारकों ने विचारों की दुनियां में व्यापक योगदान किया और ये विचार सदियों तक प्रचारित होते रहे।

5.3.3 बौद्ध मत

बौद्ध मत के उल्लेखों को प्रथम सदी ई. में हान वंश के शासन से लिया जा सकता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि भारतीय भिक्षुओं को हान के संवाहक द्वारा दिए गए निमंत्रण के फलस्वरूप कायम मतंग तथा धर्मराण्य हान के दरबार में गए। यद्यपि इस यात्रा की ऐतिहासिकता पर प्रश्नचिन्ह लगाया गया है, लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि यात्रियों एवं सौदागरों के द्वारा रेशम के व्यापारिक मार्ग से बौद्ध धर्म को चीन लाया गया।

कुछ समय बाद बौद्ध मत की शिक्षाएं लोकप्रिय हो गईं और उनको शाही संरक्षण भी प्राप्त हो गया। इस संदर्भ में राजकुमार शिओ जिलयांग तथा सम्राट वू बी का उदाहरण दिया जा सकता है क्योंकि उन दोनों ने बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया था। चीन में अनेक बौद्ध मठों की स्थापना हुई और बहुत से लोग भिक्षु बन गए। आम जनता के असन्तोष को दूसरी शिक्षा में समायोजित करने के लिये शासक वर्गों के लिये बौद्ध धर्म कन्फ्यूशियस व्यवस्था की अपेक्षा अधिक सरल साबित हुआ। बौद्ध धर्म की पुनर्जन्म तथा मुक्ति की शिक्षाओं के कारण लोग दूसरे जीवन में खुशहाली की कामना करने लगे। जहां ताओ मत ने व्यक्तिगत पलायन प्रस्तुत किया, वहीं बौद्ध धर्म ने मुक्ति को। ताओवादी तथा बौद्ध मत के विचारों की तुलना करने के लिये वाद-विवाद हुए। अधिकतर भिक्षु ऊपरी वर्गों से आते थे। कुछ भिक्षुओं को उनके बाल्यकाल से बौद्ध मठों में लाया गया।

भिक्षुओं के लिए चीन में कठोर नियम थे किन्तु कुछ वर्षों के बाद भिक्षु भी जमींदार हो गए। मठों के

भू-स्वामी होने के कारण उनके पास विशाल विशेषाधिकार एवं सम्पत्ति थी। वे राज्य के करों तथा श्रम सेवाओं से मुक्त थे। ये मठ कुछ न कुछ सामाजिक कार्यों को भी सम्पन्न करते थे और इनका इस्तेमाल सरायों, सार्वजनिक स्नानगृहों, बैंकिंग संस्थाओं के रूप में भी किया जाता था।

बौद्ध धर्म का मुख्यतम योगदान साहित्य एवं स्थापत्य कला के क्षेत्र में था। चीन के बौद्ध धर्म के नियमों को *सान त्सांग* कहा जाता है और फिर उनको चिंग अर्थात सूत्वों में विभाजित किया गया। भारतीय भाषाओं के कई बौद्ध ग्रंथों का रूपांतरण चीनी भाषा में किया गया। चीनी यात्री बौद्ध धर्म के ग्रंथों की खोज में लगातार भारत की यात्रा पर आते रहे जिसके कारण दूसरे देशों के विषय में भौगोलिक विशेषताओं, वहां के सामाजिक तथा आर्थिक जीवन का ज्ञान हुआ।

बहुत से बौद्ध मठों के अतिरिक्त कई बौद्ध स्तूपों तथा मंदिरों का निर्माण हुआ। ऐसी कई अनोखी मूर्ति कला एवं चित्र कला हैं जिनको बौद्ध धर्म ने प्रभावित किया (चित्र देखें)। वास्तव में बौद्ध धर्म ने विशेष रूप से तांग शासन काल में मूर्ति कला, स्थापत्य कला तथा चित्र कला के क्षेत्रों में अति महत्त्वपूर्ण योगदान किया। तुन हांग में स्थित हजारों बुद्ध गुफाएं मिट्टी की मूर्तियों, दीवार चित्रों तथा मूर्ति कला का अद्भुत नमूना प्रस्तुत करती हैं।

यहां पर हमें यह याद रखना चाहिए कि कन्फ्यूशियस, ताओ तथा बौद्ध धर्म प्रमुख धर्म बने रहे, किन्तु तांग शासन के समय में चीन में अन्य धर्मों को भी लागू किया गया और जिनके निम्न उदाहरण हैं :

- उत्तरी चीन में ईरान से पारसी मत पहुँचा,
- ईरान में उत्पन्न मैनिशई मत सातवीं सदी के अंतिम वर्षों में चीन में फैला और बाद में उसके अनुसरण कर्ताओं को प्रकाश का उपासक कहा गया।
- ईसाई धर्म का एक सम्प्रदाय नैल्टोरियनवाद भी चीन पहुंचा,
- अरब सौदागरों के माध्यम से चीन में इस्लाम धर्म भी फैला।

राजनीति तथा जनता के दैनिक जीवन पर विभिन्न धर्मों का जो प्रभाव पड़ रहा था उसको भी चुनौती देने के प्रयास चीन के अंदर किए गए। उदाहरण के तौर पर फू यी (559-639 ई.) ने बौद्ध धर्म की वैधता पर प्रश्न किया और उसका कहना था कि वह सम्राट की शक्तियों का दुरुपयोग कर रहा था। उसने महसूस किया कि भिक्षु एवं भिक्षुणियां ऐसे कीड़े थे जो कर अदा करने से मुक्त थे। उसका कहना था कि उनको उत्पादन कार्यों में वापस भेजा जाए। इसी के साथ-साथ यह भी देखा जाना चाहिए कि जनता पर नियंत्रण करने के लिये शासक वर्गों ने विभिन्न धर्मों का सफलतापूर्वक उपयोग भी किया।

बोध प्रश्न 2

1) प्राचीन काल में जिन विचारधाराओं का उदय हुआ उनका 10 पंक्तियों में विवेचन कीजिए।

....
....
....
....
....
....
....
....
....

2) बौद्ध धर्म पर 10 पंक्तियों में एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

....
....
....

....

....

....

....

....

....

....

3) निम्नलिखित में कौन-सा कथन सही है और कौन-सा गलत, सही (√) तथा गलत (x) के चिन्ह लगाइए :

   i) कन्फ्यूशियस मूल रूप में एक चीनी नाम है।

   ii) कन्फ्यूशियस मत एक पश्चिमी नाम नहीं है।

   iii) कन्फ्यूशियस मत मुख्यतः एक पश्चिमी नाम है।

   iv) कन्फ्यूशियस मत एक पूर्णतः जापानी नाम है।

5.4 मध्य काल

उत्तर-तांग काल में तीनों प्रमुख धर्मों, अर्थात् कन्फ्यूशियस, बौद्ध एवं ताओ धर्म चीनी समाज एवं राजनीति को निरंतर प्रभावित करते रहे। यद्यपि इन मतों में समय-समय पर उतार-चढ़ाव आते रहे क्योंकि विभिन्न शासक वंश अपने-अपने हितों के अनुरूप धर्म का समर्थन करते थे। लेकिन हम यह नहीं कह सकते कि विभिन्न धर्मों का प्रयोग अपने हितों के लिये केवल शासक वर्गों के द्वारा किया गया। समाज के शोषित वर्गों, विशेषकर किसानों के द्वारा भी विभिन्न धार्मिक नियमों की व्याख्या अपने-अपने दृष्टिकोणों के अनुरूप की गई और जब कभी भी उन्होंने अपने शोषकों के विरुद्ध विद्रोह किया, तब धार्मिक विचारधारा से प्रेरणा प्राप्त करने की कोशिश भी की गई। मिंग तथा चिंग शासन के समय की यह एक स्थायी विशेषता थी। ठीक इसी समय विद्यमान धर्मों को एक नई दिशा देने के भी प्रयास हुए।

5.4.1 नव-कन्फ्यूशियस मत

11वीं सदी ई. में नव-कन्फ्यूशियस मत के नाम से एक अन्य विचारधारा का उदय हुआ। यद्यपि यह मूल रूप में कन्फ्यूशियसवादी मूल्यों एवं विचारों का पुनः उत्थान था लेकिन इसके अंदर बौद्ध एवं ताओ मतों के विचारों का भी समावेश था। चाऊ तुम ने (1016-1073 ई.) ऐसे "निरंकुश" विचार का निर्माण किया जिसका मूल तत्व सार्वभौमिकतावाद था। सामाजिक संबंधों में उसका विचार आदर्शवादी लक्ष्य के इर्द-गिर्द था किन्तु उसने सामंती व्यवस्था को "निरंकुश" की अभिव्यक्ति के रूप में समझा।

जिन अन्य विद्वानों ने नव-कन्फ्यूशियसवाद को दिशा प्रदान की, उनमें चेंग बंधु—चेंग हाओ तथा चेंग यी के विचार भी शामिल थे। उन्होंने उस "तर्क" की अवधारणा को विकसित किया जो सृष्टि का मूल तत्व थी। सामाजिक स्थितियों के आधार पर लोगों में अंतर करते हुए उन्होंने उनसे अपील की कि वे स्वयं को चीजों के परिवर्तित होने वाले सुनिश्चित विचार से अलग रखें। कई कन्फ्यूशियस ग्रंथों को इस समय में "पुनः" लिखा गया या फिर सम्पादित किया गया। शासक वर्गों ने अपने नियंत्रण को और मज़बूत करने के लिए पुनः नव-कन्फ्यूशियस विचारधारा का उपयोग किया।

5.4.2 मंगोलों के अधीन धर्म

13वीं सदी के दौरान चीन पर मंगोल आक्रमणों का गहरा प्रभाव हुआ। यहां पर हम मंगोल शासन के राजनीतिक परिणामों का उल्लेख नहीं करेंगे। मंगोल शासन को युआन नाम से जाना गया और उसने धर्म के क्षेत्र में सहिष्णुता की नीति का अनुसरण किया। लेकिन मैत्री सम्प्रदाय तथा लोट्स सोसाइटी को युआन विरोधी गतिविधियों के कारण दमन का सामना करना पड़ा। इस शासन ने लामावादी बौद्ध मत को संरक्षण प्रदान किया और नव-कन्फ्यूशियस मत भी इस समय में लोकप्रिय बना रहा।

इस काल की उल्लेखनीय घटना इसाई मिशनरियों का आगमन थी क्योंकि उन्होंने शासक घराने को कैथोलिक

धर्म में परिवर्तित कर लिया था। लेकिन गुजुकखां के द्वारा फादर गिऔवानि (1245 ई. में) को बताया गया कि पोप तथा अन्य सभी ईसाई शासकों के द्वारा उसे सम्मान दिया जाए। वास्तव में इस समय पश्चिमी लोगों के साथ लगातार गतिविधियां चलती रहीं । लेकिन वास्तव में इस्लाम धर्म ने इस समय में शाही संरक्षण के अधीन अपना कुछ प्रभाव चीन में बढ़ाया। बहुत से विस्थापित लोग अपने साथ फारसी भाषा तथा अरब संस्कृति को चीन लाए और इसका स्वागत चीनियों के द्वारा विशेष तौर पर खगोल एवं दवाई के क्षेत्र में किया गया।

5.5 मिंग-चिंग काल

मिंग शासन के दौरान कन्फ्यूशियसवाद एक प्रमुख दर्शन बना रहा, जबकि बौद्ध मत तथा ताओ मत का पतन हुआ। कन्फ्यूशियसवाद का शिक्षा पर व्यापक प्रभाव पड़ा। साम्राज्यिक कॉलेज में पढ़ाये जाने वाले उन पाँच प्राचीन ग्रन्थों तथा चार पुस्तकों का उदाहरण दिया जा सकता है, जो कन्फ्यूशियस मत से संबंधित थीं।

सम्राटों ने बहुत से विद्वानों को रखा। इस काल की कुछ प्रसिद्ध साहित्यिक रचनाएं निम्न प्रकार से थीं :

दि रोमान्स ऑफ थ्री किंग्डम्स : यह ऐतिहासिक कथा-वस्तु तथा चरित्रों पर आधारित उपन्यास है।

आऊट लॉज ऑफ दि मार्श : यह किसान विद्रोहों का विवरण है।

जर्नी टू दि वैस्ट : इसमें मौंकी शासक सुन वूकोंग, बौद्ध मत के भिक्षुओं, देवताओं एवं दानवों के माध्यम से उस समय की सामाजिक वास्तविकताओं का मिश्रण किया गया है।

मिंग शासन से चिंग शासन में हुए रूपांतरण के समय में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन यह था कि ऐसे विचारकों का उदय हुआ जिन्होंने बहुत-सी समकालीन समस्याओं के उत्तर खोजने के प्रयास किए। इन विद्वानों में फ़ांग यीचीह, वांग फूचिह कू यानवू, हुआंग त्सूंग ही, तांग चेन तथा यान युआन प्रमुख थे। इनमें से अधिकतर ने सामंती शोषण का विरोध किया। वांग का कहना था कि "देश के शासक द्वारा भूमि का अधिग्रहण नहीं करना चाहिए।" कू यानवू का विश्वास था कि "ज्ञान को उपयोग के लिए प्राप्त किया जाये", हुआंग ने सामंती कानूनों की यह कहकर आलोचना की कि "ये कानून एक परिवार के कानून थे", यान का विश्वास था कि "संपूर्ण भूमि का उपयोग विश्व में संपूर्ण जनता के द्वारा किया जायेगा" वह नव-कन्फ्यूशियसवाद के विचारों का कटु आलोचक था।

चिंग शासकों ने नव-कन्फ्यूशियसवादी विचारों में अपना विश्वास घोषित किया। इसका उपयोग जनता पर अपना प्रभावशाली नियंत्रण स्थापित करने एवं बनाए रखने के लिए किया गया। उदाहरण के लिये, सम्राट कांग सी ने 1684 ई. में चूफू की यात्रा करके कन्फ्यूशियस के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। यद्यपि विचारों एवं विद्वानों का प्रयोग शासक वर्गों के नियंत्रण को बनाए रखने के लिये किया गया। लेकिन कुछ ऐसे भी विद्वान थे जिन्होंने भ्रष्ट व्यवस्था की आलोचना को जारी रखा। वू चिंगजू जैसे लेखकों ने नागरिक सेवा परीक्षा पर व्यंग्य लिखे। इन सबके बावजूद भी कन्फ्यूशियस विचारधारा की प्रमुखता बनी रही और आगामी इकाइयों 13, 28 में हम यह विवेचन करेंगे कि इसको कैसे चुनौती दी गई। इसी तरह से चीन में 19वीं सदी में ईसाई धर्म के उद्‌भव और उसके प्रभाव की विवेचना आगामी इकाइयों (इकाई 6, 13 और 14) में की जायेगी।

5.6 धर्म एवं विद्रोह

इससे पहले के भाग में हमने धर्म तथा संस्कृति के क्षेत्रों में घटित विशेष घटनाओं की विवेचना की । हमने यह भी उल्लेख किया कि बहुत से सम्राटों तथा शासक वर्गों ने जनता पर अपना नियंत्रण बनाए रखने के लिये कैसे धर्म का उपयोग किया। लेकिन वे सदैव अपनी इच्छा के अनुरूप ऐसा न कर पाए। विभिन्न क्षेत्रों एवं समय-समय पर सामंती शोषण के विरुद्ध कृषकों के विद्रोह हुए। अधिकतर किसान संघर्षों में किसानों एवं उनके नेतृत्व ने अपने शोषकों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए धार्मिक विचारों से प्रेरणा प्राप्त की। हमें संपूर्ण चीनी इतिहास में यह प्रवृत्ति 19वीं सदी के अंत तक निरंतर दिखाई देती है।

प्रथम प्रमाणित कृषक विद्रोह चेन शेंग वू गोंग के नेतृत्व में तीसरी सदी ई.पू. के प्रारंभ में चिन शासन के

दौरान हुआ। इसके बाद येलो टर्बन अपराइजिंग (Yellow Turban Uprising) जैसे कई कृषक विद्रोहों का उल्लेख हमें प्राप्त होता है। इस विद्रोह के दौरान चांग जियाओ ने *ताइपिंग ताओ* (न्याय का सिद्धांत) जैसे गुप्त धार्मिक सम्प्रदाय की स्थापना की। अपने विचारों का प्रचार करने के लिए उसने जनता के बीच भ्रमण किया और हाऊ दरबार को चुनौती दी। लंबी लड़ाई के बाद हान की सेनाओं ने उसकी कृषक सेना को पराजित कर दिया। लेकिन हम यहां पर उन कुछ कृषक विद्रोहों का ही उल्लेख करेंगे, जिनमें धर्म ने किसानों को लामबंद करने में व्यापक भूमिका अदा की।

i) सोंग शासन के दौरान एक महत्त्वपूर्ण कृषक विद्रोह का नेतृत्व फौंग (1120 ई.) के द्वारा किया गया। किसानों को संगठित करने के लिए उसे मैनसियसवाद से प्रेरणा प्राप्त हुई।

ii) झोंग शियांग ने सोंग शासन के विरुद्ध सन् 1130 ई. में एक दूसरे कृषक विद्रोह का नेतृत्व किया। कृषकों में जागृति पैदा करने के लिए उसने भी धर्म का प्रयोग किया।

iii) सन् 1351 ई. में रेड स्कावर्ज (Red Scarves) नामक दूसरा किसान विद्रोह हुआ। इस किसान विद्रोह में व्हाइट लोट्स सोसाइटी ने, जो एक धार्मिक सम्प्रदाय था, महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

iv) महिला किसान नेता तांग सैयर बौद्ध धर्म तथा ताओ धर्म के विचारों से प्रभावित थी। उसने शांतुंग में किसान विद्रोह का नेतृत्व किया। (यही विद्रोह प्रारंभिक मिंग काल में 1420 ई. में हुआ) उसको गिरफ्तार करने के लिए कई भिक्षुणियों को गिरफ्तार किया किन्तु फिर भी उसको गिरफ्तार न किया जा सका।

v) चिंग शासन के दौरान गुप्त धार्मिक सम्प्रदाय एवं संगठनों ने किसान आंदोलनों का नेतृत्व किया। इस संदर्भ में लिन शूंगवेन को उद्धृत किया जा सकता है। लिन हेविन एंड अर्थ सोसाइटी (Heaven And Earth Society) का नेता था और उसने 1786 ई. में एक सशक्त कृषक विद्रोह का नेतृत्व किया। इसी तरह से हेविनली रीजन (Heavenly Reason) सम्प्रदाय के अधिकतर सदस्य गरीब कृषक थे । इस सम्प्रदाय ने 1813-14 ई. में चिंग शासन को चुनौती दी। आगे चलकर ताइपिंग विद्रोह ने भी ईसाई धर्म से प्रेरणा प्राप्त की थी। इसका विवरण इकाई 13 में किया गया है।

इस तरह के सभी कृषक विद्रोहों को सूचीबद्ध करना कठिन है। लेकिन यहां पर विशेष महत्त्व इस बात पर दिया गया है कि जहां पर एक ओर शोषित-पीड़ित जनता पर अपना नियंत्रण बनाये रखने के लिए शासक वर्गों ने धार्मिक अवधारणाओं का प्रयोग किया, वहीं दूसरी ओर गरीब जनता ने अपने शोषकों का विरोध करने के लिए धर्म से प्रेरणा प्राप्त की।

बोध प्रश्न 3

1) रिक्त स्थानों को उनके बीच दिए गए उपयुक्त शब्द से भरिए :

   i) .... के द्वारा 'निरंकुश' का प्रचार सृष्टि के सार्वभौमिक तत्व के रूप में किया गया।

   (क) चाऊ ताई (ख) चाऊ ची

   (ग) चाऊ तुम (घ) चुंग हाऊ

   ii) मिंग शासन के दौरान...................... प्रमुख दर्शन बना रहा।

   (क) बौद्ध धर्म (ख) कन्फ्यूशियसवाद (ग) ताऊचीज़्मवाद

   iii) प्रसिद्ध साहित्यिक रचना...................... ऐतिहासिक कथावस्तु तथा चरित्रों पर आधारित थी।

   (क) आउट लॉज आफ दि मार्श

   (ख) जर्नी टू दि वैस्ट

   (ग) दि लास्ट इम्परर

   (घ) दि रोमान्स आफ थ्री किंग्डम्स

2) नव-कन्फ्यूशियसवाद पर 10 पंक्तियों में संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3) मंगोल शासन के दौरान धर्म की क्या भूमिका थी? 10 पंक्तियां लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

5.7 जापान का प्राचीन धर्म एवं संस्कृति

चीन का विवरण करने के बाद अब हम जापान पर अपना ध्यान केंद्रित करेंगे। यह वह समय था जबकि चीनी विचारों तथा संस्थाओं का प्रसार हुआ। जापान में सामाजिक संस्थाओं के विकास को हियान काल से देखा जा सकता है जब एक नई सभ्यता के ढांचे की नींव रखी गई। इस काल में जापान में महाद्वीपीय संस्कृति ने प्रवेश किया और वह विद्यमान विचारों के साथ समाहित हो गई। यह अंतःक्रिया शातिपूर्वक सम्पन्न हुई और राजकुमार शोतोकू तैशी के द्वारा निर्मित 17 धाराओं वाले सविधान में इसको सूचीबद्ध कर दिया गया। शोतोकू तैशी उस गुट का प्रतिनिधित्व करता था जिसने नए बौद्ध धर्म के विचारों को अपनाने की वकालत की। इन विचारों की उत्पत्ति भारत में हुई थी और ये चीन एवं कोरिया के माध्यम से जापान पहुंचे। बौद्ध धर्म ने सुसंस्कृत धार्मिक तथा दार्शनिक व्यवस्था को उपलब्ध कराया। ऐसा नवोदित राज्य की जरूरतों के अनुरूप था।

5.7.1 स्वदेशी आधार

बौद्ध धर्म से पूर्व का जापान पैतृक गुटों में संगठित था और उनको *उजि* कहा जाता था। उनके धार्मिक विचारों को *शिन्तो* अर्थात् "देवताओं का मार्ग" के नाम से 7वीं सदी ई. में संकलित किया गया। इन विचारों के द्वारा उन "सर्वोच्च मानवों" या देवताओं पर बल दिया गया जिनको *कामी* कहा जाता था और वे पर्वतों, झीलों तथा वृक्षों पर निवास करते थे। शासकों ने आध्यात्मिक तथा धर्म-निरपेक्ष दोनों प्रकार की शक्तियों का दावा किया। जापान में बहुत से देवताओं का प्रचलन था, लेकिन इजे में स्थित मदिर मुख्य शाही मंदिर बन गया था। यामातो राज्य के शासकों ने स्वयं को सुन देवी का वंशज बताया। अमातेरसू नो तथा अन्य को देवियों के रूप में वर्णित किया गया। आगे चलकर इस तरह की मिथ्याओं का प्रयोग शाही परिवार के वंशजीय संबंधों को सुन देवी के साथ बिना किसी विघ्न के जोड़ा गया। तोकुगावा वंश के सर्वनाश का समर्थन करने में चुनिन्दा लोग काफी शक्तिशाली थे। इसी आधार पर द्वितीय विश्वयुद्ध से ठीक पहले के वर्षो में चीन के अंदर जापान के साम्राज्यवादी प्रसार को उचित ठहराया गया।

5.7.2 बौद्ध धर्म

जापान में बौद्ध धर्म के प्रारंभ की तिथि को परंपरागत तौर पर सन् 552 ई. माना गया है, परन्तु यात्रियों के द्वारा इसको इससे भी पूर्व चीन एवं कोरिया से जापान लाया गया। बौद्ध धर्म के विचारों को शासक वर्गों ने काफी पसंद किया। उन्हीं के कारण गहरी बौद्धिक गतिविधियों का उदय हुआ और शाही संरक्षण में कई प्रकार की विचार-धाराओं का प्रसार हुआ। शिन्तों जैसे स्वदेशी धर्म के साथ बौद्ध धर्म का कम टकराव हुआ। बौद्ध धर्म के नरा सम्प्रदाय के काल की मुख्य विशेषता यह थी कि उसके अनुयायी बहुत बुद्धिमान एवं कुलीन थे। कल्पनातीत प्रश्नों पर की गई विद्वतापूर्ण टीकाएं छोटे कुलीन तथा शिक्षित वर्ग को बहुत आकर्षित करती थी। सैचो तथा कुकोय जैसे दो भिक्षुओं ने बौद्ध धर्म की भूमिका को विकसित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान किया।

सैचो ने अपने उपदेशों का आधार लोट्स सूत्र को बनाया और एक ऐसी धार्मिक व्यवस्था का निर्माण किया जिसके अंतर्गत अपार श्रद्धा रखनी होती और प्रगाढ़ चिंतनशीलता का अनुसरण करना होता था। ऐसा करने से ज्ञान की प्राप्ति हो सकती थी। इस सम्प्रदाय ने महावै रोकाना सूत्र का उपयोग किया इस सम्प्रदाय का कहना था कि विभिन्न प्रकार की शिक्षाएं ज्ञान के विभिन्न स्तरों का प्रतिनिधित्व करती थी और महावैरोकाना सूत्र "ज्ञान की अंतिम तथा सर्वोच्च स्थिति" थे। इसको शिंगो की गुप्त शिक्षाओं या उपदेशों के द्वारा प्राप्त किया जा सकता था। प्रारंभ में अध्ययन पर बल दिया जाता था किन्तु अब यह अनुष्ठानों में परिवर्तित हो गया था और यह उपदेशकों से शिष्यों को प्राप्त हो गया।

ये दोनों सम्प्रदाय (तेन्दाय, शिंगो) 9वीं तथा 10वीं सदियों के दौरान खूब फले-फूले और हैयन कुलीन वर्ग में इसको काफी समर्थन मिला। किसी एक व्यक्ति के जीवन में सर्वव्यापी मुक्ति एवं ज्ञान के ये विचार जनता के लिये कोई धर्म न बन सके। कुलीन वर्ग ने एक साथ कई तरह के सिद्धांतों का अनुसरण किया और इस प्रकार से इन धार्मिक विचारों ने एक उचित धर्म-निरपेक्ष वातावरण तैयार करने में मदद की।

5.7.3 कुलीन संस्कृति

कुलीन संस्कृति का मार्गदर्शक सिद्धांत शैली एवं स्वरूप में निहित था। प्रारंभ में इसका निर्माण चीन से सीखे हुए सिद्धांतों के आधार पर किया गया। इसी के साथ-साथ इसका निर्माण बौद्ध धर्म के विचारों के द्वारा भी हुआ और जापानी संस्कृति हेइन काल में अपनी पूर्णता पर पहुंच गई। सौंदर्य एवं आकर्षण इसकी मुख्य विशेषताएं हैं तथा धर्म-निरपेक्ष उद्देश्यों को जारी रखना उनके मुख्य लक्ष्य थे।

सन् 759 ई. में जिस प्रथम काव्य संकलन का प्रकाशन हुआ उनको मैन्योशू कहा जाता है और ये कविताएं इस संस्कृति की सरलता एवं ताजगी का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधित्व करती हैं। इनमें प्राकृतिक सौंदर्य का बोध भी होता है। कविता एक महत्त्वपूर्ण कार्य हो गया तथा इनके माध्यम से परंपराओं को सुनिश्चित किया जाने लगा और वे शब्दों के प्रयोग को सुनिश्चित करती। इनका प्रयोग अपनी हृदय की गहराई को अभिव्यक्त करने के लिए भी किया जाता।

अन्य दूसरे प्रकार की रचनाएं भी की गई और 11वीं सदी ई. में सर्वश्रेष्ठ रचना मुरशाकी शिकिबू द्वारा रचित टेल ऑफ दी जेन्जी थी। वह एक दरबारी थी और प्रथम बड़ी लेखिका भी। यह एक महत्त्वपूर्ण बात थी कि उस काल में एक लेखिका ने ऐसी रचना की। पुरुषों ने चीनी भाषा को सीखा और उनसे ये आशा की गई कि वे चीनी भाषा में लिखें। उस समय चीनी भाषा को ज्ञान की भाषा समझा जाता था और जबकि महिलाएं जापानी भाषा में लिखती थीं तथा वे अधिक अच्छा लेखन कर सकीं। इसका लाभ यह हुआ कि लेखिकाओं द्वारा अच्छा साहित्य लिखा गया।

बौद्ध धर्म के मठों द्वारा कला तथा स्थापत्य कला को दिया गया संरक्षण अति महत्त्वपूर्ण था तथा इससे संबंधित कुछ दृष्टांत अभी भी उपलब्ध हैं। टेल ऑफ दी गेंजी जैसी पुस्तकों का चित्रण दीवारों पर किया गया है।

"अच्छे लोगों" *(योकी हितो)* की कुलीन संस्कृति ने सौंदर्य बोध की तलाश पर काफी बल दिया। सौंदर्य बोध आदर्शों की उच्च स्तरों के साथ पहचान की गई। महाद्वीपीय विचारों को शीघ्रता के साथ ग्रहण तथा कीकृत करने और सुसंस्कृत संस्कृति की सुंदरता की श्रेष्ठ भावना के साथ रचना ने बाद की जापानी संस्कृति मूल तत्व का निर्माण किया।

5.8 मध्यकालीन धर्म एवं संस्कृति

कामाको बाकूफू के साथ जिस योद्धा (*बुशि*) संस्कृति का उद्‌भव हुआ उसके मूल्य कुलीन हेइन दरबारी संस्कृति से बहुत भिन्न प्रकार के थे। धर्म में जो बदलाव आए उसके फलस्वरूप सामान्य जनों के दैनिक जीवन में उसका हस्तक्षेप बहुत अधिक हो गया। इस काल के मूल्यों में निहित थे वीरता, आत्म-अनुशासन, कर्तव्य परायणता तथा सादे जीवन के विचार। टेल ऑफ दी गेंजी (हेइके की कहानियां) हेइन दरबार का सूक्ष्मदर्शी चित्रण करती हैं और दि हेइके मोनोगातरी जैसी 13वीं सदी की युद्ध कहानियां मध्यकाल के मूल्यों एवं हितों की अच्छी प्रतीक हैं। धर्म के क्षेत्र में भी बौद्ध धर्म के प्राचीन अनुष्ठानों एवं जटिल धार्मिक सिद्धान्तों का स्थान सरल सिद्धान्तों एवं कम से कम अनुष्ठानों ने ले लिया। मध्यकाल ने सभी प्रकार से अंगीकार करने योग्य दार्शनिक व्यवस्थाओं को बनाने के प्रयासों को नकार दिया। इसके स्थान पर बहुवादी तथा विरोधाभासपूर्ण विचारों को स्वीकार किया गया और उन्हीं का अनुसरण ये परिवर्तन लोकप्रिय धर्म के उदय एवं वृद्धि के लिये अति महत्वपूर्ण थे और समाज के द्वारा व्यापक स्तर पर उनके प्रभावों को महसूस किया गया।

5.8.1 धर्मों का विकास

इस समय का सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक परिवर्तन *ज़ेन* बौद्ध धर्म का लागू किया जाना एवं विकास था। योद्धा वर्ग को *ज़ेन* धर्म के विचार बड़े ही आकर्षित लगे और उन्होंने इसे संरक्षण प्रदान किया, जिसके कारण इन विचारों का प्रसार एवं वृद्धि हुई।

ज़ेन के प्रचार में दोगेन और इजाय (1141-1215 ई.) जैसे भिक्षुओं ने महत्वपूर्ण योगदान किया। इन भिक्षुओ ने जापान में शिक्षा प्राप्त की थी और फिर वे चीन गए तथा वहां पर उनको *चैन* (ध्याना) ने प्रभावित किया। उनकी शिक्षाओं के मूल तत्व ग्रंथों की अपेक्षा गुरु के द्वारा विचार ग्रहण करने पर अधिक बल देते थे। उनका तर्क था कि अनुष्ठान या अच्छे कार्य की अपेक्षा मुक्ति प्राप्त करने की उचित विधि आत्म अनुशासन एवं चिंतन थी। वे अपने विचारों के अनुरूप उन प्रारंभिक बौद्ध सम्प्रदायों की तुलना में साधारण एवं सदाचारी जीवन व्यतीत करते थे, जिनके मठ सुसम्पन्न और यहां तक कि आडंबरपूर्ण स्थलों में बदल गए थे।

ज़ेन बौद्ध मत ने इस विचार का प्रचार किया कि आत्म-अनुशासन के द्वारा प्राणी अपने अंतःकरण को समझ सकता था। सामाजिक पद महत्वपूर्ण नहीं होते। सभी ज्ञान को प्राप्त कर सकते थे। दोगेन ने चिंतन-मनन के महत्त्व को बताया और ईजाय ने अपने शिष्यों की पुरानी सोच को तोड़ने के लिए विरोधाभासी भाषा का प्रयोग किया।

अमिदा बौद्ध मत भी एक महत्वपूर्ण धार्मिक मत था और उसको भी जनता में व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ। इस मत का कथन था कि जो कोई भी सच्चाई में गंभीरता के साथ विश्वास करेगा उसका पुनर्जन्म पश्चिमी स्वर्ग या *जोदो* में होगा। गेशिल (942-1017 ई.) तथा बाद में शिरान (1173-1262 ई.) जैसे प्रचारकों ने यात्राएं कीं। उन्होने *जोदो* मंदिरों को स्थापित किया तथा समर्थकों को विजयी किया। शिरान ने पूर्णतः विश्वास पर बल दिया और उसका कहना था कि ग्रंथों का अध्ययन ज्ञान प्राप्ति के मार्ग को अवरुद्ध करता है तथा अहम् तुष्टि साधन मात्र है।

इन धार्मिक मतों के विपरीत भिक्षु निचिरेन (1222-1282 ई.) ने लोट्स सूत्र में सर्वव्यापी संदेश को खोजने का प्रयास किया और उसने राज्य के साथ घनिष्ठ संबंध की वकालत की। वह जापान को बौद्ध धर्म की भूमिका बनाना चाहता था और इस कारण से उसने अन्य सम्प्रदायों का तिरस्कार किया। उसका मानना था कि उसकी प्रार्थनाओं के कारण जापान मंगोलों के आक्रमणों से बच गया। उसके इस दावे के कारणवश उसके समर्थकों की संख्या में और वृद्धि हुई।

इस समय में जनता के बीच बौद्ध धर्म के प्रसार का कारण शिरान द्वारा दिया गया यह तर्क था कि भिक्षुओं को आडंबरपूर्ण जीवन का परित्याग करना चाहिए। अब पुरोहित विवाह कर सकते थे और वे अपने उत्तराधिकारियों को भी नियुक्त कर सकते थे। इस परंपरा के कारण बौद्ध सम्प्रदायों का विकास स्थायी संस्थात्मक ढांचे के रूप में हुआ, इनमें से कई गुट अपनी सेनाओं के प्रयोग द्वारा राजनीति में व्यस्त थे और अपने आंतरिक मामलों का प्रबंधन करते थे। मठों का स्थानीय लोगों के द्वारा समर्थन किए जाने के कारण— वे ऐसे सशक्त केन्द्र बन गए जो युद्धों में संलग्न रहते। इस संदर्भ में क्योतो का दृष्टांत दिया जा सकता है क्योंकि वहां पर लोटस मंदिरों के द्वारा 20 विशाल किलों का निर्माण किया गया था। इसी तरह से ओसाका में इस्तीयामा हो गंजी एक बड़ी सशस्त्र इक्को केन्द्र था।

शिंतो सहित अनेक प्रकार की धार्मिक परंपराओं में खूब वृद्धि हुई। एक शिंतो विद्वान किलाबाटेक शिकाफूस (1293-1353 ई.) ने शाही परिवार के विषय में एक सशक्त ग्रंथ की रचना की और इस ग्रंथ में जापान के भाग्य को सुनिश्चित करने के लिए तर्क दिए गए।

इस समय में अनेक प्रकार की विचारधाराओं का उदय हुआ। धर्म को केवल इस विचार के द्वारा एकीकृत किया गया कि उनके दार्शनिक विचारों के लिए निष्पादन केन्द्र था। चाहे कोई धर्म-निरपेक्ष हो या धार्मिक, वह केवल अपने स्वयं के प्रयासों के द्वारा ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता था। पद एवं स्थापित परंपरा हेइन कुलीन संस्कृति के केन्द्र बिन्दु थे लेकिन अब इनका स्थान कार्य की प्रतिष्ठा एवं इच्छा ने ले लिया था।

5.8.2 योद्धा संस्कृति का निर्माण

योद्धाओं की बुशि दार्शनिक एवं धार्मिक विचारों की इस नई लहर के द्वारा प्रेरित किया गया था जिसकी अभिव्यक्ति सांस्कृतिक कल्पना के द्वारा की गई और इस सांस्कृतिक कल्पना ने आदमी, प्रकृति तथा समाज की मूल एकता को स्पष्ट तौर पर व्यक्त किया। इस एकीकृत तथा आत्मनिर्भर संपूर्णता की कल्पना को बुशि के द्वारा बनाए रखा गया, लेकिन इसका निर्माण उस प्रभाव के कारण हुआ था जो चीन तथा अभिजात वर्ग *(कुगे)* के प्रारंभिक सौंदर्य बोध से आया था।

इस युग की स्थापत्य कला ने इस एकता को प्रतीकात्मक बनाया। योद्धाओं के घरों का निर्माण इस ढंग से किया गया कि उनमें धार्मिक चिंतन, चाय उत्सव तथा काव्य सम्मेलनों जैसी गतिविधियों को भली भांति से सम्पन्न किया जा सकता था।

इस युग के साहित्य में युद्ध कथाओं की प्रमुखता है और उनको सामान्यतः भ्रमणकारी भिक्षुओं के द्वारा रचा गया। *तैहेइकी* या "महान शाति का तिथिक्रम" में 1318-1367 ई. के बीच के संघर्ष का विवरण है और यह उस युग की सर्वश्रेष्ठ रचना मानी गई है। बहुत से ग्रंथों ने जीवन की क्षण-भंगुरता जैसे बुद्ध के विचारों को अभिव्यक्त किया है।

नाटक के क्षेत्र में औपचारिक नौ नाटकों ने अपनी चरम पराकाष्ठा को प्राप्त किया। प्रारंभिक परंपराओं को जोड़ते हुए कनामी (1333-1384 ई.) तथा जीमी (1368-1444 ई.) ने एक शक्तिशाली नाटकीय माध्यम में *नो* को संकलित किया। यद्यपि ये नाटक उच्च शैली के रूप हैं लेकिन इनके अंदर अंतःकरण की भावनाओं—प्रेम एवं घृणा—स्वयं की परीक्षा करने वाले बुद्ध के विचारों का विशुद्ध विवरण किया गया है। संगीत निष्पादन का अभिन्न अंग था और उसका उपयोग भी प्रभावशाली ढंग से किया गया है।

चित्रकला को सुंग तथा युआन के ज़ेन कलाकारों के द्वारा प्रभावित किया गया। ये काली स्याही से बनी चित्र कलाएं *(सुमी)* साधारण एवं प्रत्यक्ष थीं। ये प्रत्यक्ष वस्तु के व्यापक प्रतिनिधि न होकर उसकी एक भावनात्मक प्रतिक्रिया मात्र थी। इन सबसे महान परंपरा की स्थापना कानो मसानोकू (1434-1530 ई.) के द्वारा की गई। इस कानों परंपरा का विकास सजावटी तत्वों के रूप में हुआ और इसने स्पष्ट रंगों का प्रयोग किया।

चाय उत्सव योद्धा वर्ग के कठोर जीवन तथा वैचारिक प्रवृत्तियों के प्रतीक थे। चाय का प्रारंभ चीन से हुआ था और वह कलात्मक तथा वैचारिक व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु बन गई। चाय के कमरे की लंबाई-चौड़ाई का आधार भारतीय बौद्ध उपदेशक उइम्बकीति का नमूना था। ये कमरे छोटे होते थे और वहां पर मेहमान चाय पीने के लिए एकत्रित होते। इनको सेन ना रिकया (1522-91 ई.) जैसे उपदेशकों के द्वारा व्यवहार में लाए जाने से ये बौद्ध विचारों के उत्सव बन गए। इनका निर्माण पूर्ण कलात्मक ढंग से किया जाता था। चाय के कमरे के बाहर चाय के बाग आकर्षक कलात्मक उपलब्धियों के प्रतीक थे।

योद्धाओं की संस्कृति को मठों एवं धनी व्यापारियों के द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया। इसने लोकप्रिय संस्कृति के साथ आंतरिक संबंधों को विकसित किया एवं जारी रखा और उस समय राजनीतिक अव्यवस्था के फेल हो जाने के बावजूद भी कलात्मक गतिविधियों की एक व्यापक भिन्नता को जारी रखा। मध्यकालीन विश्व ने कुलीनों के सीमित स्थलों को छोड़ा लेकिन जनता के बीच प्रेरणा के व्यापक तथा रचनात्मक स्रोत को पाया गया।

बोध प्रश्न 4

1) सही या गलत कथन पता लगाकर सही (√) या गलत (x) का चिन्ह लगाइए :

i) बौद्ध धर्म से पूर्व के जापान को पैतृक गुटों में संगठित किया गया था और उनको *उजी*

कहा जाता था।

ii) प्राचीन जापान में अभिजातीय संस्कृति के दिशा-निर्देशक सिद्धांत स्वरूपविहीन एवं तत्वहीन थे।

iii) मध्यकाल में जापान की संस्कृति तथा धर्म के मुख्य मूल्य वीरता, आत्म-अनुशासन, कर्तव्य के प्रति समर्पण तथा साधारण जीवन थे।

iv) मध्यकाल की एक अन्य महत्वपूर्ण धार्मिक घटना सूफीवाद का लागू होना था।

2) प्राचीन जापान में विद्यमान अभिजात संस्कृति के विषय में 10 पंक्तियां लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3) जापानी संस्कृति के मध्यकाल के दौरान हुए धार्मिक परिवर्तनों पर 10 पंक्तियाँ लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

4) योद्धा संस्कृति पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।

....

....

....

....

....

5.9 तोकूगावा काल में धर्म एवं संस्कृति

तोकूगावा काल के दौरान सापेक्ष राजनीतिक स्थायित्व के कारण सामाजिक संबंधों में कुछ स्थायित्व आया जिससे नई व्यवस्था के लिए शासक वर्ग एक विचारधारा को प्रतिपादित कर सका। जिस कन्फ्यूशियसवाद का प्रचार यू *हुसी* के द्वारा किया गया उसे नव-कन्फ्यूशियसवाद कहा गया—जापान में उसका प्रचलन 12वीं सदी

.. से ही था और और अब वह एक प्रमुख वैचारिक व्यवस्था हो गया था। सर्वव्यापी मतों की व्यवस्था का निर्माण योद्धा वर्ग के महत्त्व के समरूप ही था और पदानुक्रम वाले समाज में इसका उद्‌भव एक सांस्कृतिक प्रबुद्ध वर्ग के रूप में हुआ था।

शांति एवं संपन्नता के कारण रचनात्मक एवं लोक संस्कृति का उद्‌भव संभव हो सका। आर्थिक सम्पन्नता तथा राजनीतिक प्रतिबद्धताओं ने योद्धा वर्ग को नगरों में रहने के लिये बाध्य किया और इसके कारण नगरीकरण बढ़ा। *शोनिन* या कस्बों की लोक संस्कृति उदित होते व्यापारिक वर्ग की उपज थी।

एक व्यवस्थित सामाजिक पदानुक्रम की आंगिक अवधारणा को परिवर्तन की उदीयमान शक्तियों के द्वारा दबाया गया। इसके बदले वृद्धि और विकास ने स्थापित मानकों तथा पदानुक्रमों को समाप्त करने में सहायता की और उन आंदोलनों को उदित किया जिन्होंने सम्राट की केन्द्रीय स्थिति को पुनः लागू करने का प्रयास किया। जिस समय तोकूगावा ने पश्चिमी शक्तियों के दबाव का सामना किया तब इन आंतरिक आंदोलनों ने अंतिम तौर पर तोकूगावा को पराजित करने में सफलता प्राप्त की।

5.9.1 विचारों के प्रतिमान

यू हूसी का नव-कन्फ्यूशियसवाद महायान बौद्ध मत के साथ कन्फ्यूशियस अवधारणाओं का मिश्रित रूप था और इसने जापान में पांच मानवीय संबंधों (पिता-पुत्र, शासक-शासित, पति-पत्नी, बड़े-छोटे भाइयों और मित्रों के बीच) के महत्त्व पर बल दिया। ये लादे गए अनुबंध काफी आकर्षक प्रतीत हुए तथा इनमें वफादारी को विशेष महत्त्व दिया गया।

बाकाफू ने कन्फ्यूशियस विचारकों को अपने सलाहकारों के तौर पर नियुक्त किया। इन सलाहकारों में सबसे प्रसिद्ध हयाशी राजेन (1583-1619 ई.) था तथा उसने 1633 ई. में इदो में एक अकादमी की स्थापना की। कन्फ्यूशियसवादी विचारों तथा शिन्तो सम्प्रदाय दोनों को इस तौर पर समान समझा गया कि वे शासक के प्रति वफादारी की मांग करते थे। इन विद्वानों ने जिन विचारों का प्रचार किया वे शासक वर्ग की विचारधारा बन गए। योद्धाओं को उचित ग्रंथों का अध्ययन करने तथा सैनिक एवं नागरिक कलाओं *(बंबू)* को सीखने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

सैनिक कलाएं बुशी की शिक्षा के पाठ्यक्रम का एक भाग थीं। लेकिन तोकूगावा यामा सोको (1622-1685 ई.) के तथा दूसरे शासकों के महान शांति युग में योद्धाओं के लिए एक ऐसे दर्शन को प्रतिपादित किया गया जिसे *बूशिदो* (युद्ध का तरीका) का नाम दिया गया। कोई युद्ध न होने के कारण सामुराइयों को सदैव अपने स्वामी की सेवा में संलग्न रहना पड़ता।

बुशी ने दूसरे समूहों पर अपनी श्रेष्ठता को साबित करने के लिए नव-कन्फ्यूशियस मत के विचारों का प्रयोग किया लेकिन इस तरह की प्रवृत्ति को नकार दिया गया क्योंकि जनता के बीच साक्षरता में वृद्धि हो रही थी। इशिदा बैगन ने (1685-1744 ई.) व्यापारियों को आत्म-परिष्कार के विचारों की शिक्षा दी जबकि निनोमिया (1787-1856 ई.) ने, जिसे "कृषक साधु" के नाम से जाना जाता था, शिक्षाओं में जीवन के प्रति कृतज्ञता के विचार का प्रसार किया।

प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन किए जाने से स्थापित धर्मों पर प्रश्न किए गए। राष्ट्रीय ज्ञान प्राप्त करने के विद्यालय (कोकूगाका) में मैनीयोशू के काव्य सग्रह तथा दी टेल ऑफ दी गेंजी को वैचारिक अध्ययनों के लिए प्रारंभ किया गया। मोतूरी नोरिंगा (1738-1801 ई.) जैसे विद्वानों ने प्राचीन ग्रंथों की टीकाएँ लिखने में जीवन व्यतीत किया और जापान की सत्य आत्मा की ओर वापस लौटने का आह्वान किया। यह प्रवृत्ति साम्राज्यिक वंश को पुनः स्थापित करने में सहायक रही। मितो स्कूल ने 1657 ई. में वफादारी की परंपरा के इस दायरे के अंतर्गत जापान के इतिहास के लेखन का प्रारंभ किया और उसको 397 जिल्दों में संग्रहित किया गया।

विचारों के विषय में प्रश्न करना तथा भिन्नता की वृद्धि की अभिव्यक्ति सामुराइ शासन के पक्के समर्थक विद्वान ओगयू सोराय (1666-1728 ई.) की रचनाओं में भी हुई। उसने चू हूसी पर अधिक निर्भरता का विरोध किया और विश्व परिवर्तन के साथ चलने की बात की। उसने कन्फ्यूशियस की मूल रचनाओं का अध्ययन करने पर बल दिया। स्थापित विचारों पर प्रश्नों को उठाने की इस प्रवृत्ति के कारणवश इस समय के बौद्धिक जीवन में विरोधाभासपूर्ण विचारों का प्रारंभ हुआ। बुशी तथा नगरवासियों में नए-नए विचार उत्पन्न होने लगे और वे मेजी जापान की नई व्यवस्था को बनाने में प्रभावकारी साबित हुए।

जापान पर डच विद्वानों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था। जिस समय जापान ने पश्चिम के साथ अपने संबंधों को समाप्त कर दिया था, तब डच विद्वानों के एक छोटे समूह को मुख्य प्रायद्वीप नागासाकी के समीप देशिमा

में रहने की आज्ञा दे दी गई थी। ये डच विद्वान जापानी भाषा को भी जानते थे, जिसके कारण वे पश्चिम के ज्ञान को विशेष तौर से औषधि, छपाई एवं बंदूक बनाने की विधि के विषय में सीख सके। इन में से सुगिता गेनपेलेन जैसे विद्वान थे और तोकूगावा शासन की समाप्ति के समय इन विद्वानों ने महत्त्वपूर्ण सूचनाओं को उपलब्ध कराया। इन डचों को जापान में "लाल बाल वाले असभ्य" कहा जाता था।

यह गहन बौद्धिक गतिविधि व्यापक रूप से फैली साक्षरता के कारण ही संभव हो पाई थी। स्कूलों को *तेराकोया* के नाम से पुकारा जाता था और इनका संचालन बौद्ध मंदिरों के द्वारा किया जाता। इन्होंने साधारण जनों को शिक्षा उपलब्ध कराई। कुछ जागीरें या हान अपने स्वयं के स्कूलों का संचालन करती थीं। 1865 में 73 प्रतिशत दाइम्यो के अपने स्कूल थे। विद्यालयों का संचालन कन्फ्यूशियस विद्वानों के द्वारा किया जाता था और वे ज्ञान प्राप्त करने के केन्द्र बन गए। कुछ विद्वानों ने 40 प्रतिशत पुरुष साक्षरता तथा 10 प्रतिशत नारी साक्षरता की बात की। यद्यपि इन आंकड़ों को लेकर वाद-विवाद हो सकता है किन्तु निश्चय ही साक्षरता का प्रसार हुआ।

5.9.2 शहरी संस्कृति का उदय

नोबूगा, हिलदेयाशी तथा तोकूगावा इयेसू के शासन काल में जो शांति जापान में स्थापित हुई थी उसके फलस्वरूप एक ऐसी संस्कृति का प्रारंभ हुआ जिसको *मोमोयामा* संस्कृति के नाम से जाना गया और यह काफी असभ्य एवं आडंबरपूर्ण संस्कृति थी। बड़े-बड़े किले शासकों की शक्ति की अभिव्यक्ति थे और तोकूगावा के प्रारंभिक शासकों के निक्को स्थित मसासोबा उच्च अलंकृत स्थापत्य कला शैली की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति है। इन किलों पर खर्चीली किस्म की चित्रकारी की गई है। शासकों द्वारा चाय स्वामियों तथा कुशल कारीगरों को संरक्षण प्रदान किया गया।

तोकूगावा सामुराइ के अधीन रचनात्मक गतिविधियाँ 17वीं सदी के मध्य तक चलती रहीं। लेकिन संस्कृति के व्यापकतम तत्वों की रचना एवं उनको नगरों के व्यापारियों तथा कारीगरों के द्वारा प्रेरित किया गया। इसका संक्षिप्त स्वरूप *उकियोई* या "गतिशील विश्व" था। इस सामाजिक व्यवस्था में पद की अपेक्षा धन की प्रमुखता थी और इस व्यवस्था में लेखन, चित्रकारी तथा नाटक के नए-नए स्वरूपों ने अपनी पूर्णता को प्राप्त किया था।

थारा सैकाका (1624-1693 ई.) कवि तथा उपन्यासकार ने विश्व के विषय में प्रभावपूर्ण ढंग से लिखा। उसके द्वारा रचित कहानियां प्रतिदिन की समस्याओं के इर्द-गिर्द घूमती रहती थीं और उसने जीवन का विवरण भी आनंद, कांड, दुर्भाग्य तथा प्रेम की समस्याओं के रूप में किया। उसके लेखों तथा कहानियों को काफी व्यापक तौर पर पढ़ा जाता था। इन उपन्यासों को लकड़ी के छपे हुए खंडों के साथ चित्रित किया गया तथा यह ऐसी कला थी जो छपाई के दौरान विकसित हुई। इन उपन्यासों में सामान्यतः महिला चरित्रों, प्रसिद्ध स्थानों तथा रोज़मर्रा के जीवन के साथ प्रसिद्ध नायकों को शामिल किया गया।

काबूकी एक अन्य प्रसिद्ध नाटककार था और वह अपने पात्रों का चुनाव ऐतिहासिक कहानियों से करता और कभी-कभी प्रेम प्रसंगों को भी अपने नाटकों में स्थान देता। उसके नाटक जापान में बड़े लोकप्रिय हुए। इन नाटकों को अपने जीवंत संवादों एवं नाटकीय प्रस्तुतीकरण के कारण व्यापक रूप से पसंद किया गया।

काव्य में मतस्नो बासनो (1644-1694 ई.) ने 17 पदों की काव्य शैली में पूर्णता को प्राप्त किया। संक्षेप में, सुझाव देते हुए, उसने प्रारंभिक सांस्कृतिक परंपराओं की व्यापकता तथा कोमल संवेदनशीलता को एक साथ अपने काव्य में स्थान दिया। यह एक ऐसे साहित्य के स्वरूप थे जो उस समय की संस्कृति से जुड़े थे। *गेसाकू* या कहानियों को मनोरंजन के लिये लिखा गया। इस शब्द का प्रयोग शैलियों के क्षेत्रों या लेखन के स्वरूप को पूरा करने के लिया किया गया।

कलात्मक उत्पादन को साहित्य तथा लकड़ी के छपे खंडों के साथ संबंधित नहीं किया गया लेकिन इसके अंतर्गत गतिविधियों का व्यापक क्षेत्र आता था। कानो परंपरा समृद्ध होती रही और अलंकृत पदों का उत्पादन ओगाता कोरीन के द्वारा किया गया और इस का श्रेष्ठ उदाहरण इस काल के सर्वश्रेष्ठ कलाकृतियों से दिया जा सकता है। इस समय मिट्टी के सर्वश्रेष्ठ बर्तनों का उत्पादन हुआ। ओगाता कोरिन का भाई ओगाता कंजन (1663-1743 ई.) प्रसिद्ध कुम्भकार था। जापान के चीनी मिट्टी बर्तनों का यूरोप को अधिक नि॰ 16वीं सदी ई. के अंत में शुरू हुआ और वहां पर इसका काफी प्रभाव था। योकर वेयर की काफी मांग बढ़ने लगी थी। चाय पार्टियां, बगीचे के दृश्यों को सजाना तथा फूलों को व्यवस्थित करना जैसी महत्त्वपूर्ण गतिविधियां भी बढ़ने लगीं।

इस तरह की सांस्कृतिक गतिविधियों का होना आर्थिक सम्पन्नता के कारण संभव हो पाया। साक्षरता के कारण इस तरह की संस्कृति को ग्रहण करने वालों की संख्या में वृद्धि हुई और छपाई का भी विकास हुआ। जापान ने 16वीं सदी के अंत में चलित टाइपिंग की जानकारी प्राप्त कर ली थी लेकिन भाषा के सौंदर्यबौध की मांग के कारण खंड छपाई की विधि आ गई थी। काफी सामग्री को प्रकाशित किया गया और पढ़ने वालों की भी काफी संख्या थी। इसलिए किसी ने बिना किसी ध्यान के चीनी पात्रों को अपनाया तब दूसरों ने शब्द उच्चारण पर ध्यान दिया और कुछ ने सरल जापानी भाषा में लिखा।

1700 ई. के आसपास यह शहरी संस्कृति अपनी चरम पराकाष्ठा पर थी और इसको *जेनरोकू* काल कहा गया। इसके बाद साहित्यिक रचनाओं के स्तर में गिरावट आई लेकिन फिर भी कुछ ऐसे लेखक एवं कलाकार थे जिन्होंने नई दिशाओं को खोजने का प्रयास किया। इसी बीच कोमोडोर मैम्यू पैरी ने जापान को पश्चिम के लिए खोल दिया। इस तरह 17वीं सदी की बौद्धिक व्यवस्था में एक प्रकार की रुकावट पैदा हो गई और इस तरह से बुद्धिजीवी लोग नई दिशाओं एवं नवीन रचनाओं के निर्माण की ओर अग्रसर हुए।

बोध प्रश्न 5

1) तोकूगावा काल में उदित विचारों के प्रतिमानों की लगभग 15 पंक्तियों में विवेचना कीजिए।

2) जापान में शहरी संस्कृति के उदय पर लगभग 15 पंक्तियां लिखिए।

....

....

3) निम्नलिखित कथनों पर सही (√) या गलत (x) का चिन्ह लगाइए।

i) चू ह्सी ने जिस नए मत का प्रतिपादन किया उसे नव-कन्फ्यूशियसवाद कहा गया।

ii) तोकूगावा शासन के समय में *मोमागामा* संस्कृति, शालीन, रचनात्मक एवं विचारपूर्ण थी।

iii) काबूकी एक प्रसिद्ध धार्मिक विद्वान था।

iv) शहरी संस्कृति के दौरान जो वातावरण संबंधी परिवर्तन हुआ, उसको *जेनरोकू* कहा गया।

5.10 सारांश

इस इकाई में आप देख चुके हैं कि कैसे बहुत से धर्मों का उदय हुआ और कैसे उनका चीन तथा जापान में विकास हुआ। चीन में कन्फ्यूशियसवाद एक प्रमुख विचारधारा बना रहा। सभी वंशों के शासक वर्गों ने अपने नियंत्रण को जनता पर बनाए रखने के लिए धर्म का प्रयोग किया। कन्फ्यूशियस मत, बौद्ध मत तथा ताओ मत सभी का एक प्रकार का प्रयोग हुआ। दूसरी ओर हम पाते हैं कि समाज के शोषित वर्गों ने कई अवसरों पर अपने शोषकों का विरोध करने के लिए बहुत से धार्मिक विचारों एवं सम्प्रदायों से प्रेरणा प्राप्त की। इसी के साथ एक विशाल साहित्य का निर्माण हुआ, जिसने चीन की सांस्कृतिक धरोहर में वृद्धि की।

जापान में बौद्ध धर्म तथा शिन्तो धर्म प्रमुख धर्म बने रहे। यहां पर भी एक अभिजातीय संस्कृति का तथा बहुत-सी विचारधाराओं का विकास हुआ। दोनों ही देशों में धर्म ने उनकी कला, निर्माण कला, सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन पर अपना प्रभाव छोड़ा।

5.11 शब्दावली

एकेश्वरवाद : एक ही ईश्वर का अस्तित्व।

बहुदेवतावाद : कई देवताओं का अस्तित्व।

5.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) प्राचीन कालीन चीन में विद्यमान धर्म के विषय में कई प्रकार की विचारधाराएँ हैं। कुछ ने इसको एकेश्वरवाद कहा और कुछ ने इसको बहुदेवतावाद। कुछ का तर्क था कि वह विश्वास पर आधारित था। तांग ने अपने वंशजों का संबंध ईश्वर के पुत्र प्रथम राजा से बताया। उनके पूर्वजों की पहचान ईश्वर के साथ की गई। देखें भाग 5.2

2) पांचों ग्रंथों के नाम बताइये। आपका उत्तर भाग 5.2 पर आधारित होना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

1) देखें उपभाग 5.3.1 एवं 5.3.2

2) बौद्ध धर्म का सबसे प्राचीन उद्धरण हान काल की प्रथम सदी ई. से प्राप्त होता है। वर्षों बाद बौद्ध धर्म के उपदेश लोकप्रिय हो गए और उनको शाही संरक्षण प्राप्त हुआ। देखें उपभाग 5.3.3

3) i) x ii) x iii) √ iv) x

बोध प्रश्न 3

1) i) चाऊ तुम

   ii) कन्फ्यूशियसवाद

   iii) दि रोमान्श ऑफ थ्री किंग्डम्स

2) 11वीं सदी ई. में एक नए पंथ का उदय हुआ। इसका पुनरुत्थान कन्फ्यूशियसवादी मूल्यों तथा व्यवस्थाओं के रूप में हुआ। बहुत से नए विद्वानों ने इस नए दर्शन को और विकसित किया। देखें उप-भाग 5.4.1

3) मंगोल शासकों ने धर्म के क्षेत्र में सहिष्णुता की नीति का अनुसरण किया। इस युग में ईसाई धर्म के आगमन से एक नए प्रकार का वातावरण बना। विदेशियों से लगातार संपर्क बना रहता था। देखें उप-भाग 5.4.2

बोध प्रश्न 4

1) i) √ ii) × iii) √ iv) ×

2) अभिजात संस्कृति का मुख्य केन्द्र उसकी शैली एवं स्वरूप पर था। इस विचार को चीन से लिया गया। मनोहरता एवं सरलता उसकी विशेषता थी। देखें उप-भाग 5.7.3

3) इस काल में सबसे महत्त्वपूर्ण धर्म का उद्‌भव *ज़ेन* बौद्ध मत का उद्‌भव था। इस दर्शन की ओर मुख्य तौर पर योद्धा वर्ग आकर्षित हुआ। देखें उप-भाग 5.8.1

4) योद्धाओं की जिन दार्शनिकीय एवं धार्मिक विचारों ने सबसे अधिक प्रेरित किया उनकी अभिव्यक्ति सांस्कृतिक कल्पना में हुई। इन विचारों का मूल मानव, प्रकृति तथा समाज की मूलभूत एकता में निहित था। देखें उप-भाग 5.8.2

बोध प्रश्न 5

1) तोकूगावा काल में विचारधारा के बहुत से प्रतिमानों का उद्‌भव हुआ। इस समय में नव-कन्फ्यूशियसवाद ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। देखें उप-भाग 5.9.1

2) तोकूगावा काल के दौरान स्थापत्य कला, चित्रकला तथा संस्कृति में सृजनात्मकता प्रमुख केन्द्र थी। उस समय यह अपने उत्कर्ष पर थी। नाटकीय संस्कृति के भी कई रूपों का विकास हुआ। देखें उप-भाग 5.9.2

3) i) √ ii) × iii) × iv) √
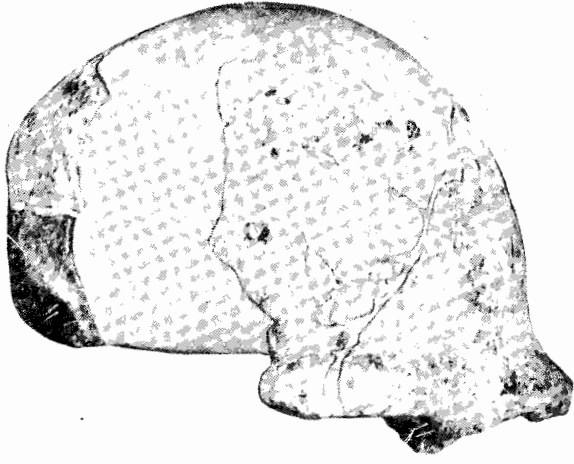
2. पीकिंग आदमी की अर्धप्रतिमा
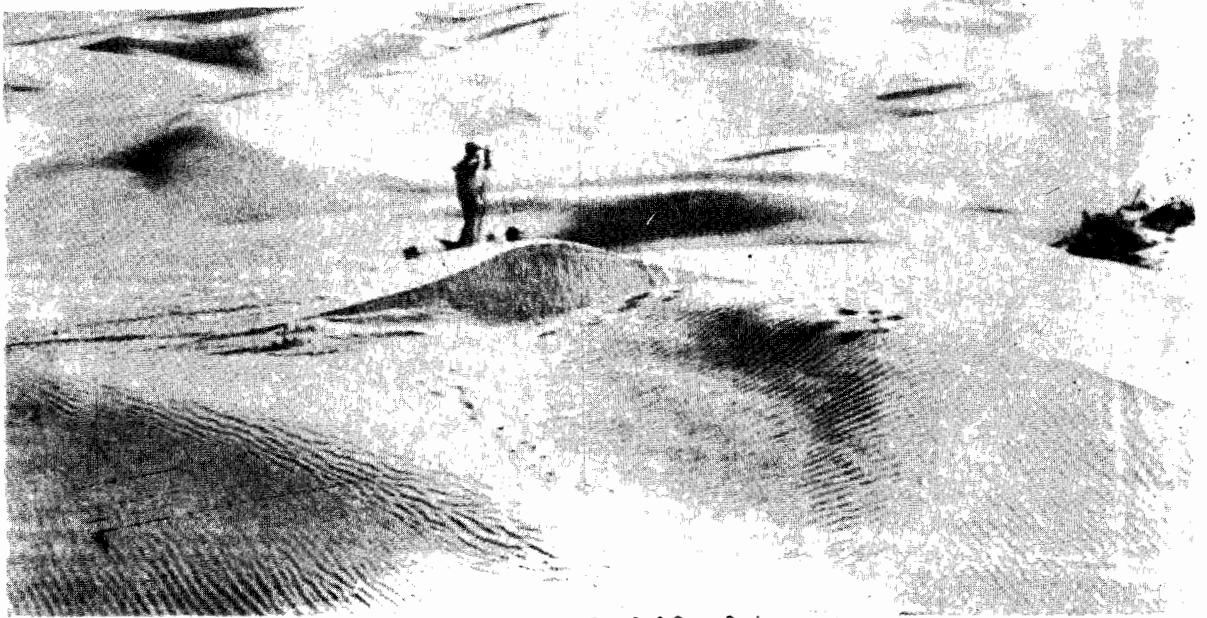
3. उत्तर-पश्चिम चीन में रेगिस्तानी भू-दृश्य

4. तिआनशान पर्वत (चीन)
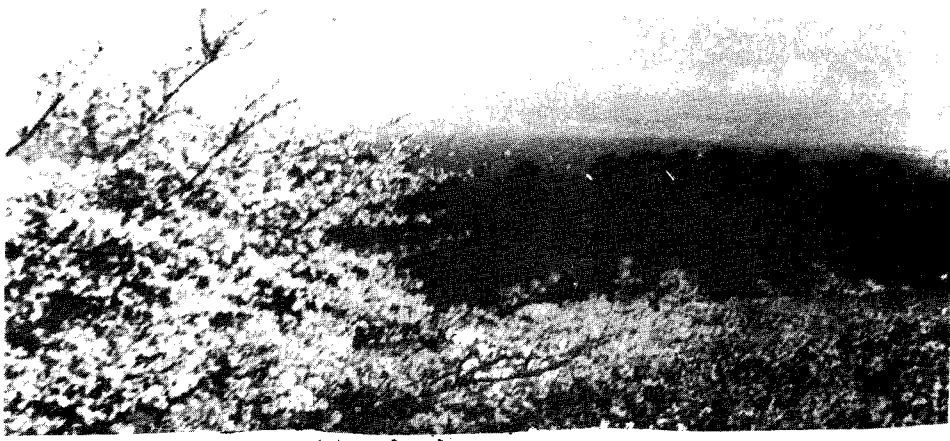
5. (अ) फूजी पर्वत का दृश्य (जापान)
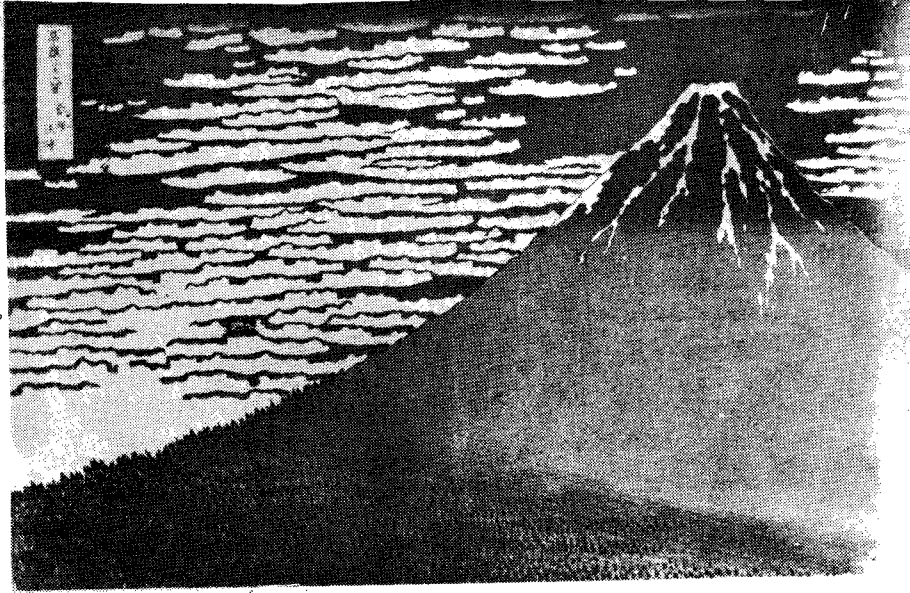
(ब) होकुसाई द्वारा बनाया गया फूजी पर्वत का रंग-चित्र जो कि "लाल फूजी" के नाम से प्रसिद्ध है।
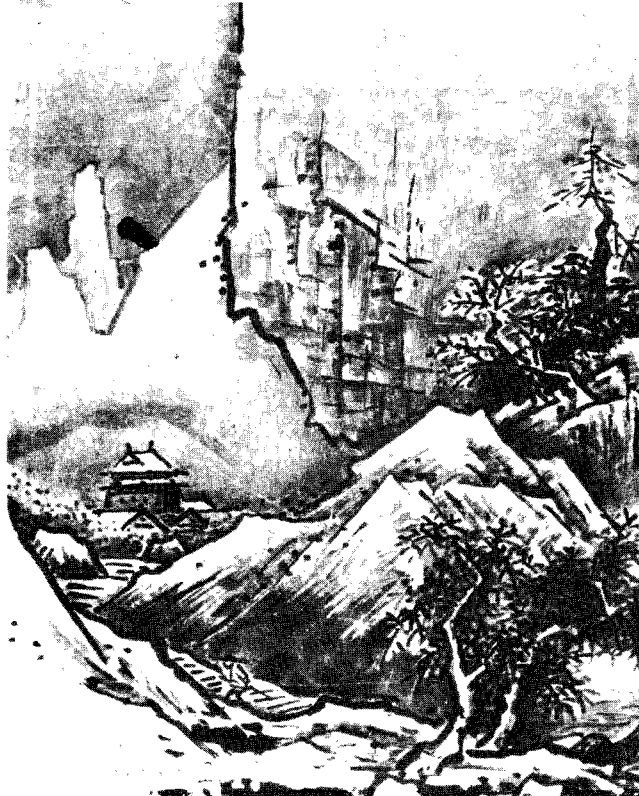
6. सेशू द्वारा बनाया गया रंग-चित्र जिसमें जापान में शीत ऋतु का चित्रण है।

7. चीन की ग्रेट वॉल के चित्र

8. भ्रष्ट चीनी अधिकारी का पुतला
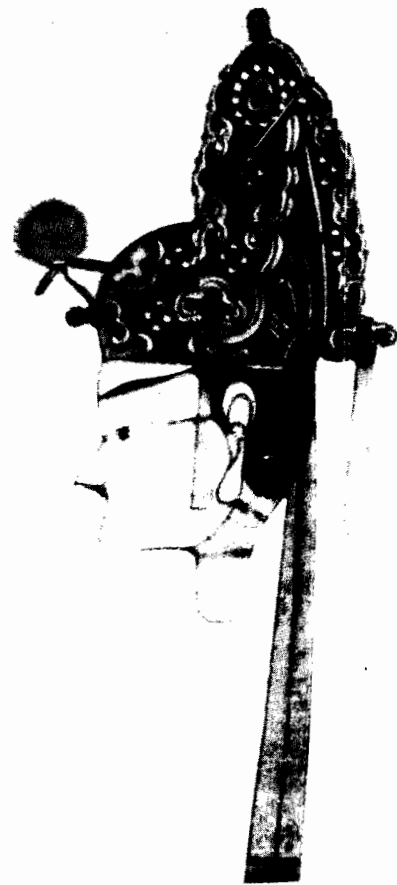
9. चीनी बुद्धिजीवी का पुतला

10. मीनामोतो तोरीतोमा—पहला शोगुन तथा कामाकुरा बाकुफू का संस्थापक (जापान)

11. ओडा नोबूनागा
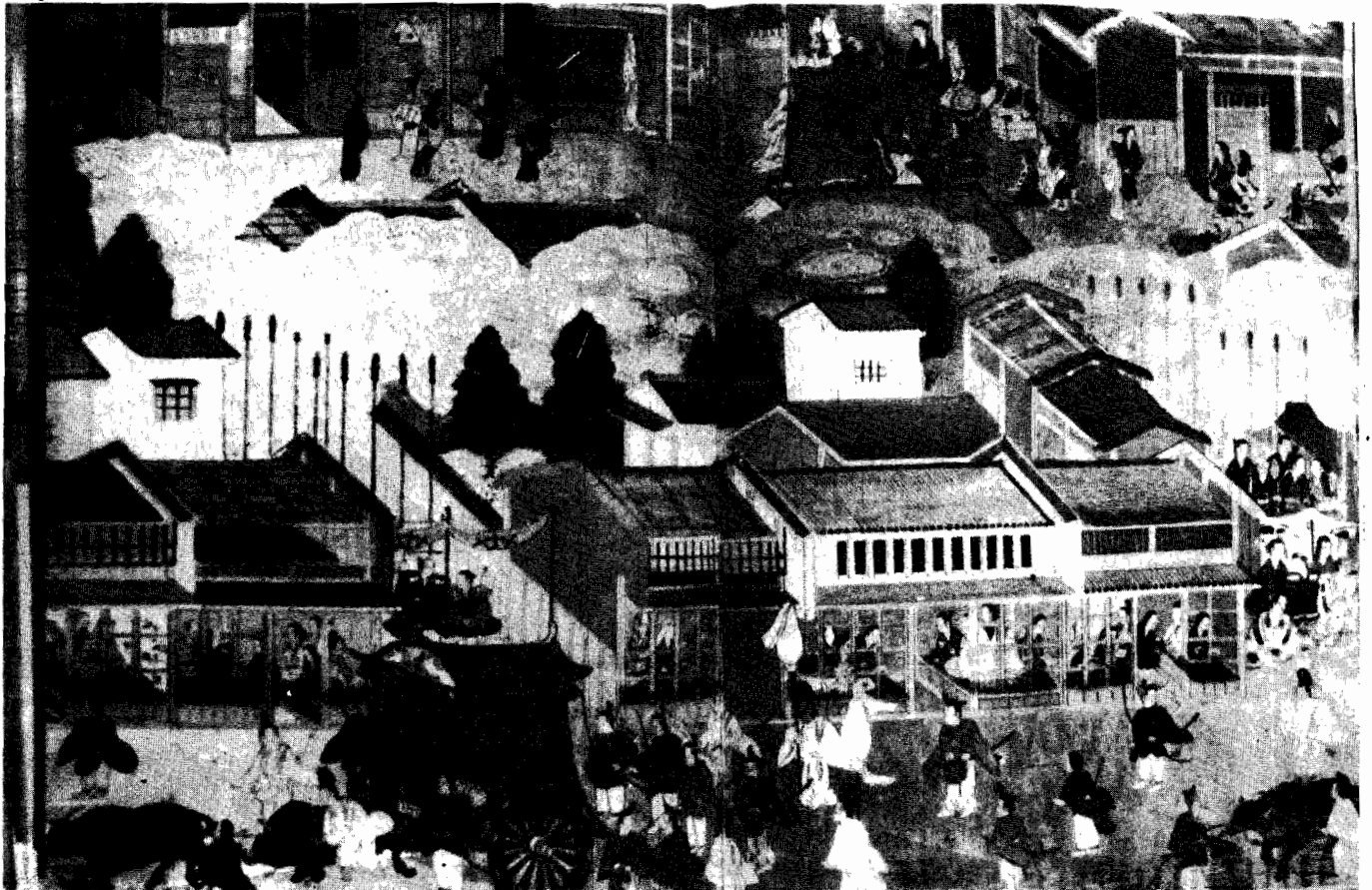
12. क्योटो में जीवन (फूजीवारा मित्सूताका द्वारा बनाया गया एक अठारहवीं शताब्दी का रंग-चित्र)

13. एक रंग-चित्र जिसमें जापान के न्यायालय का चित्रण है
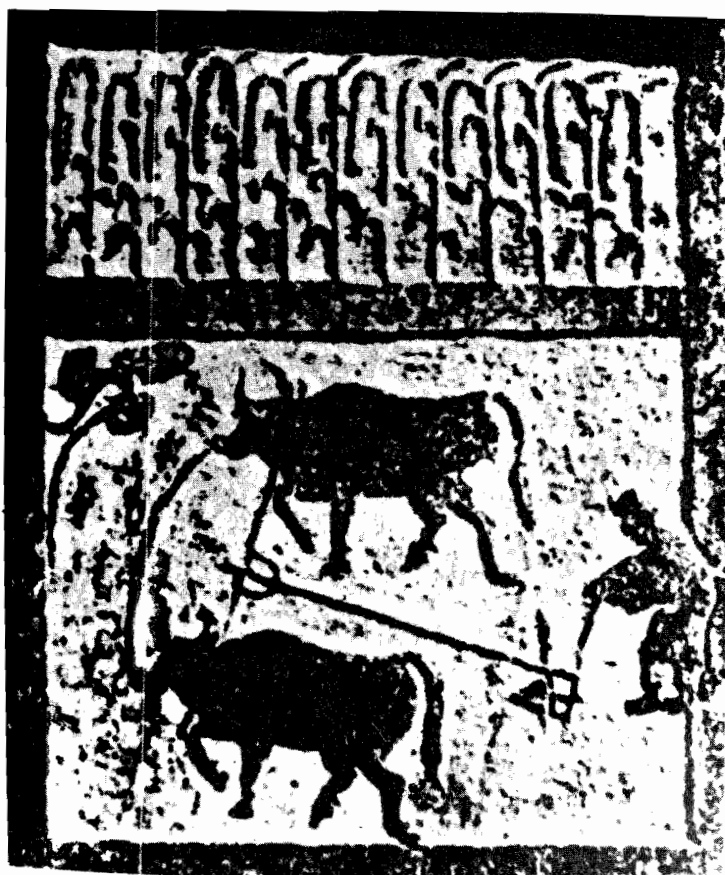
14. चीन में हान काल के पत्थर पर बनाए गए भित्तिचित्र : बैल द्वारा खींचे गए हल से भूमि का जोतना

15. अनाज रखने का बर्तन (हान काल चीन)

अ) चावल की भूसी निकालना

16. कागज बनाना (हान काल चीन)

17. चीन में ताग काल की चिकनी मिट्टी की चित्रित लघु मूर्ति

स) अनाज को पीसना

ब) अनाज को भूसी से अलग करना

18. गाइड टू फार्मिंग किताब (चीन) में से लिए गए दृश्य
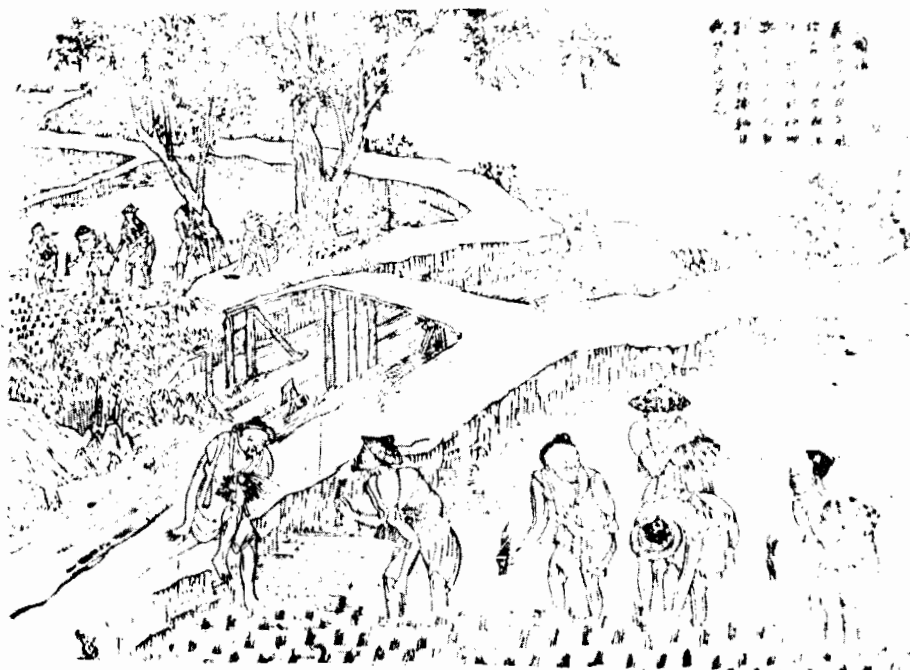
ब) चावल के अंकुरों का प्रतिरोपण
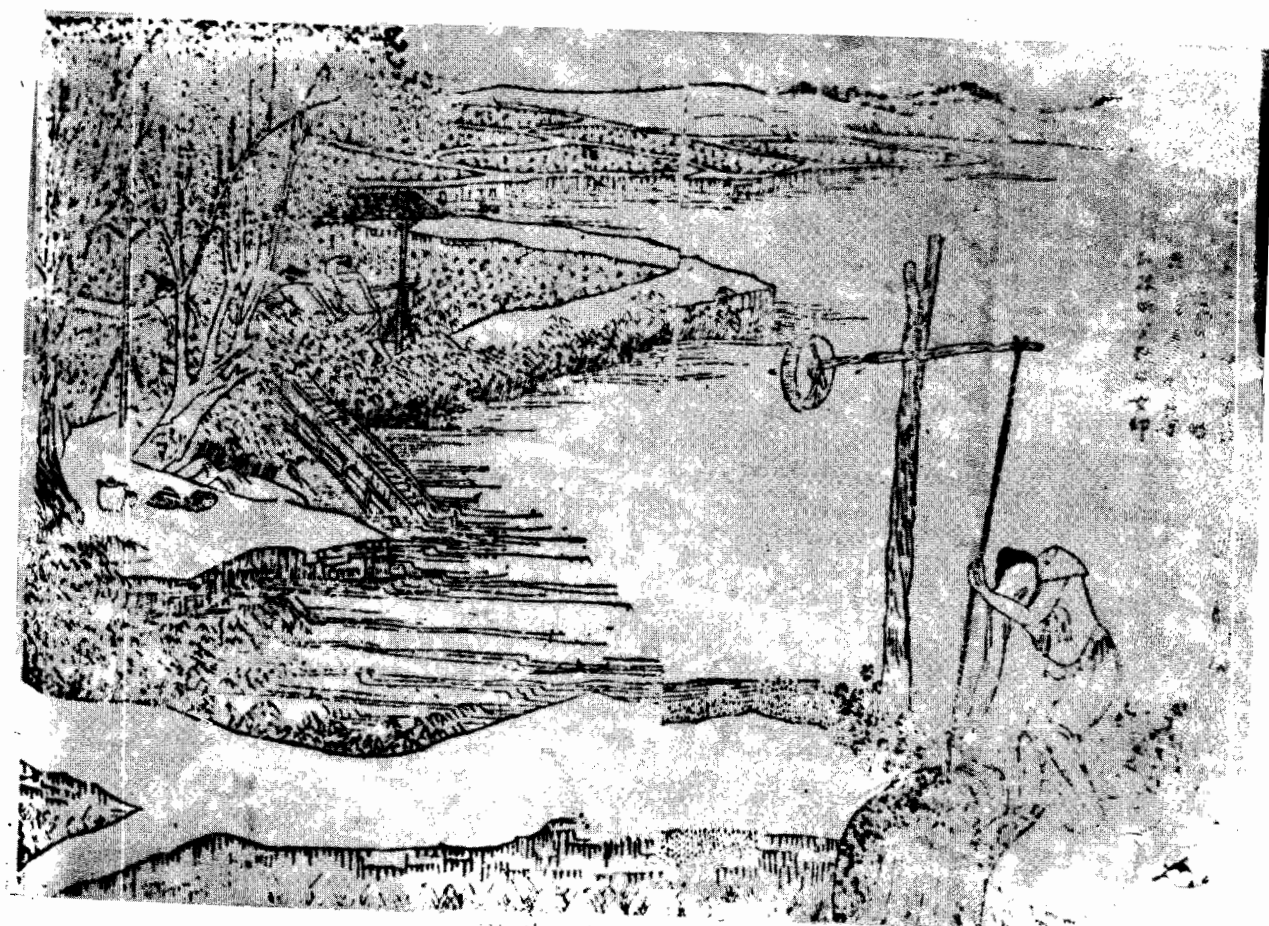
अ) खेतों की सिंचाई

स) फसल काटना

द) रेशम के कीड़े पालना

य) रेशम को चरखी पर लपेटना
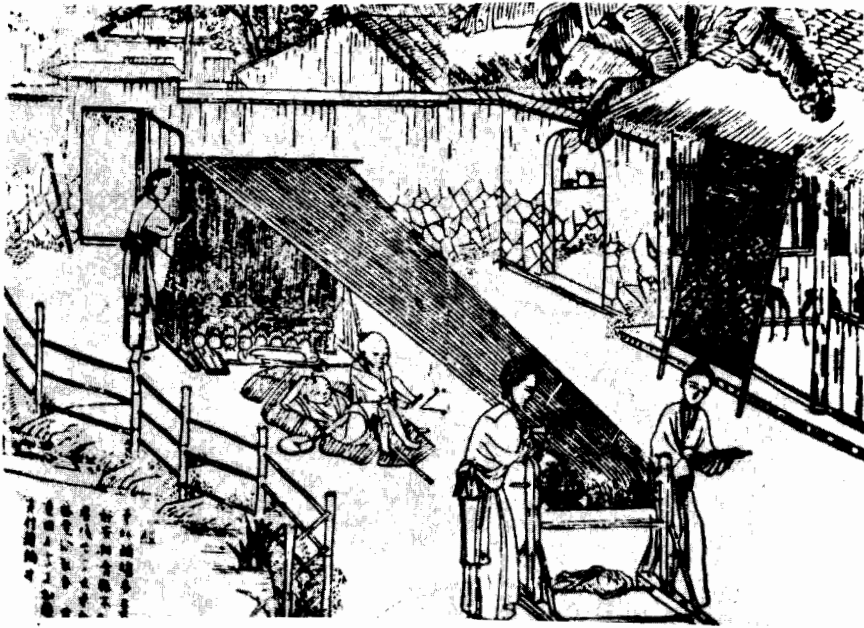
फ) रेशम को लपेटना
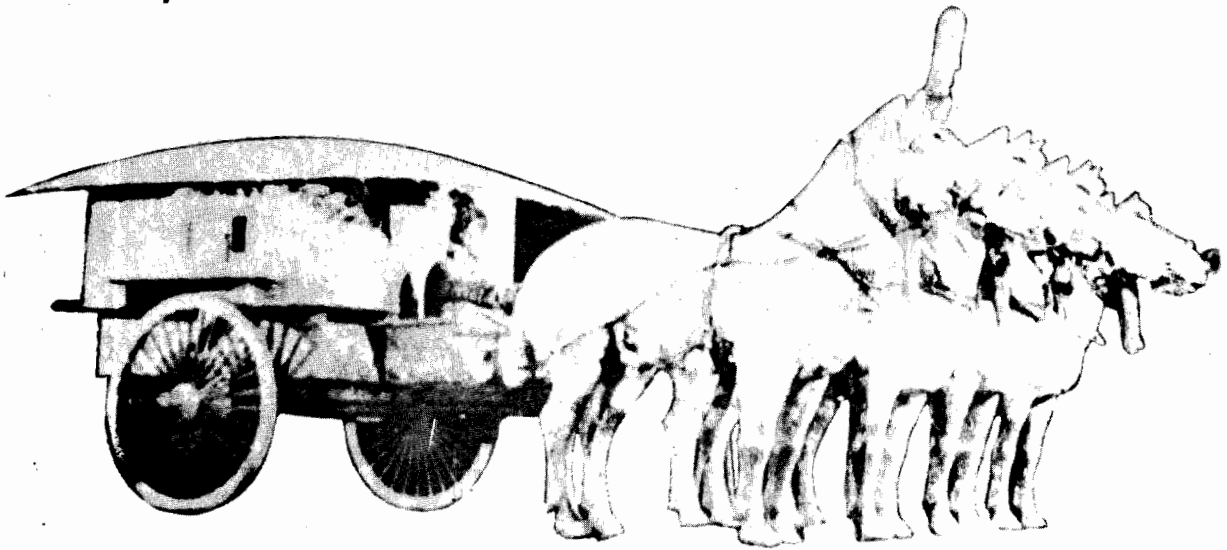
19. चिन वश का कांस्य रथ (चीन)
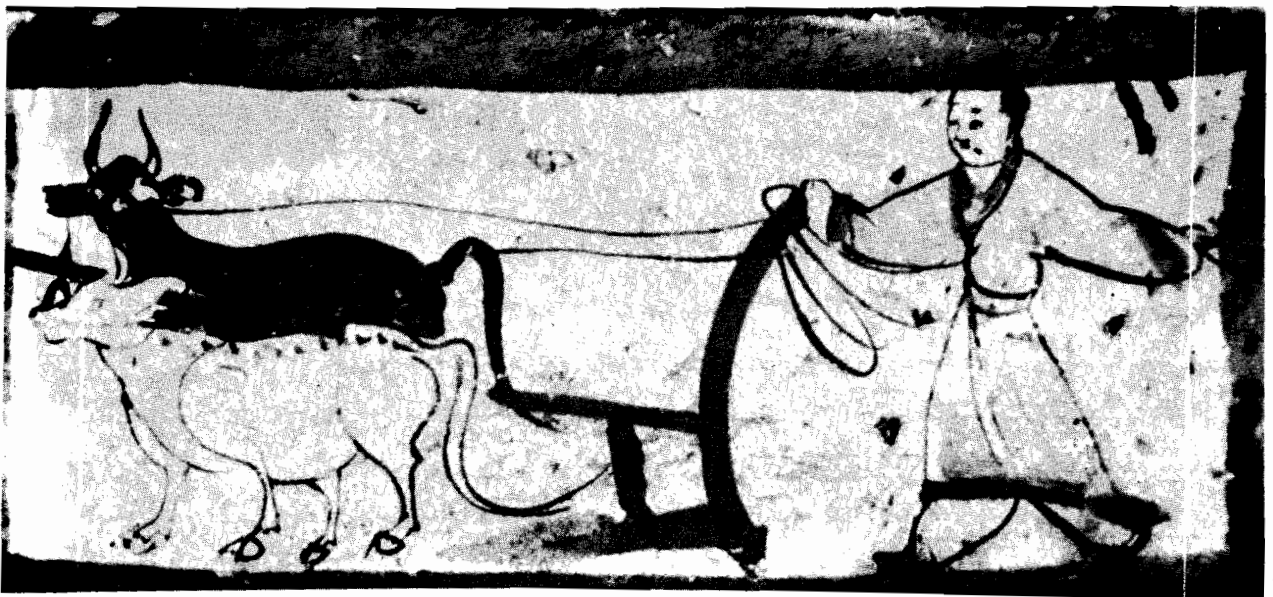
20. भूमि को जोतना (वी-जिन कालीन चीन)
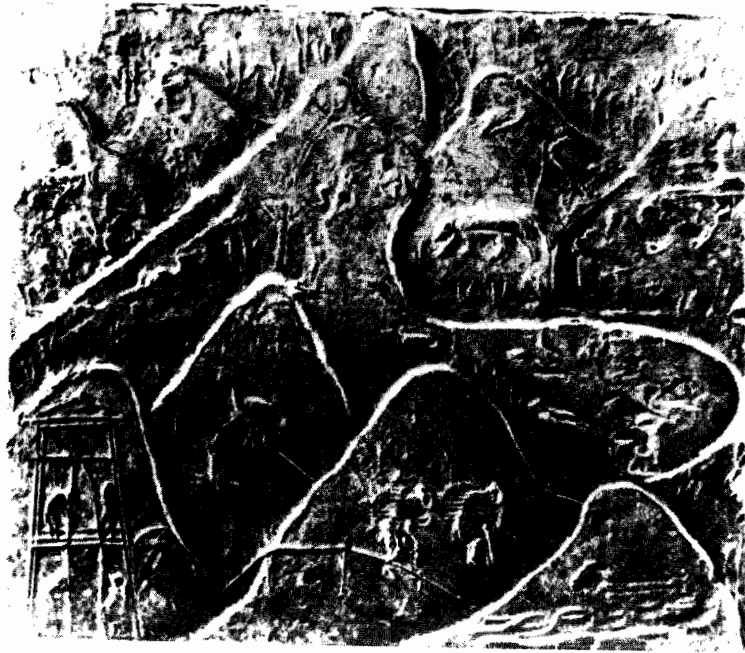
21. ईंट पर बना नमक के खेत का एक रंग-चित्र (हान कालीन चीन)

22. पत्थर पर बना भित्तिचित्र जिस पर बुनाई के दृश्य का चित्रण है (हान कालीन चीन)

23. चीनी मृदभांड

स) चमकने वाले चीनी मिट्टी के बर्तन ([illegible] कालीन)
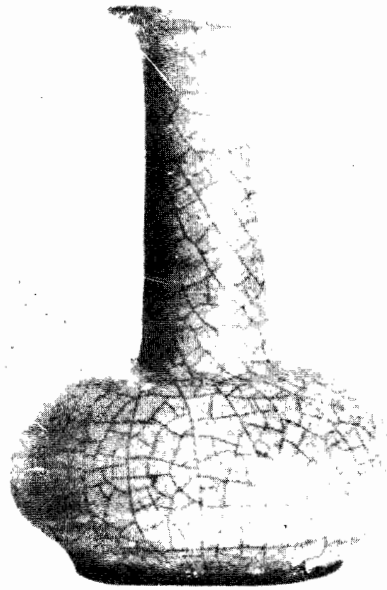
अ) कलश (चिन कालीन)

य) चीनी मिट्टी का कलश (मिंग कालीन)

द) घड़ा जिस के सिरे पर काही रंग का अमरपक्षी बना [illegible]

24. रेशम मार्ग : चाओ काल का भित्तिचित्र जिसमे व्यापारियों के विश्राम करने तथा घोड़ों तथा ऊटों को पिलाने का चित्रण है।
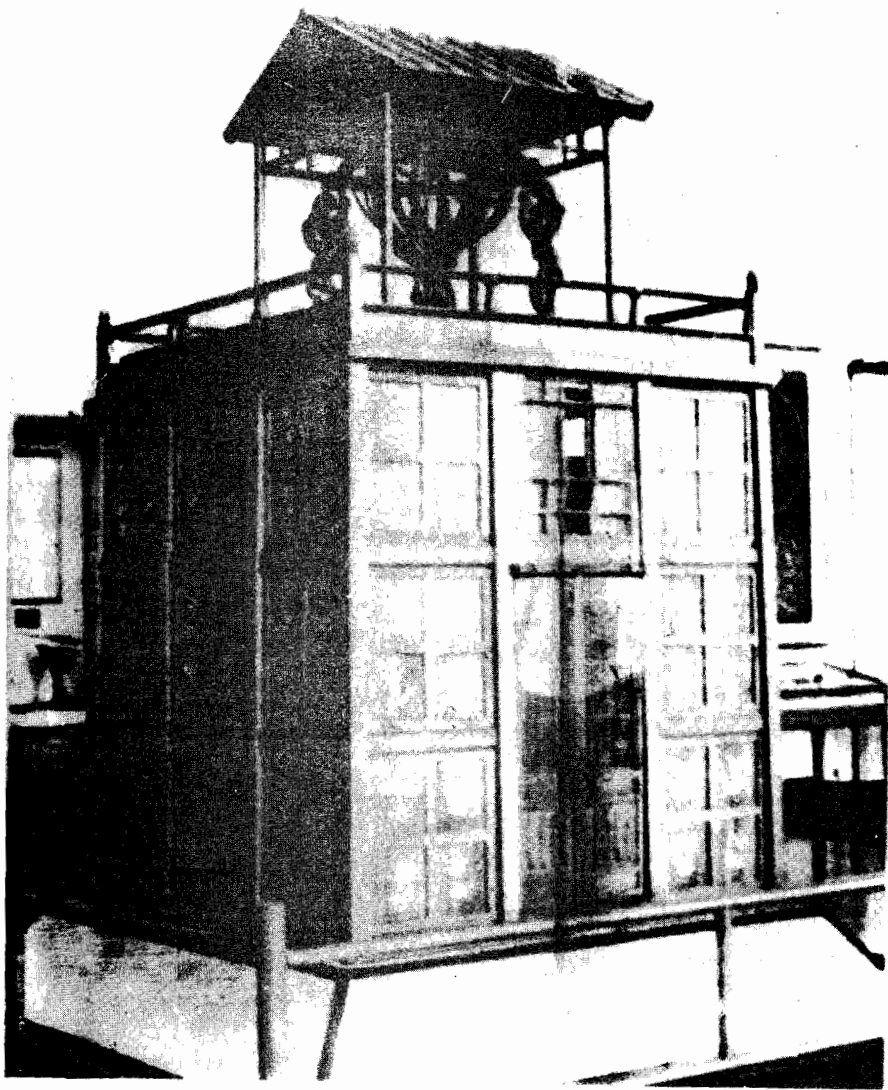
25. अ) चीन में सुग काल का समय बताने वाला यत्र।
यह यंत्र पानी की शक्ति से चलाया जाता
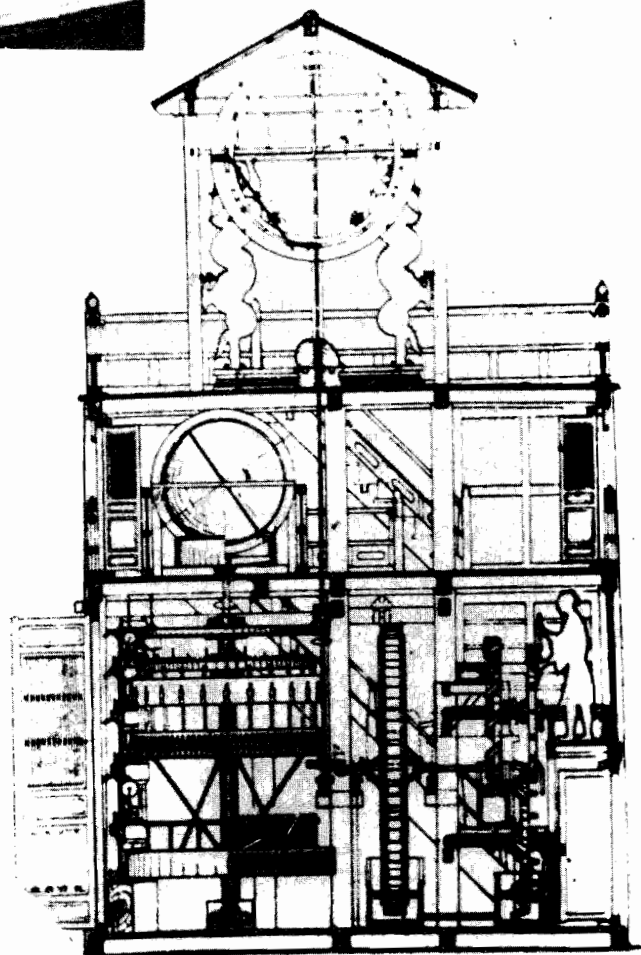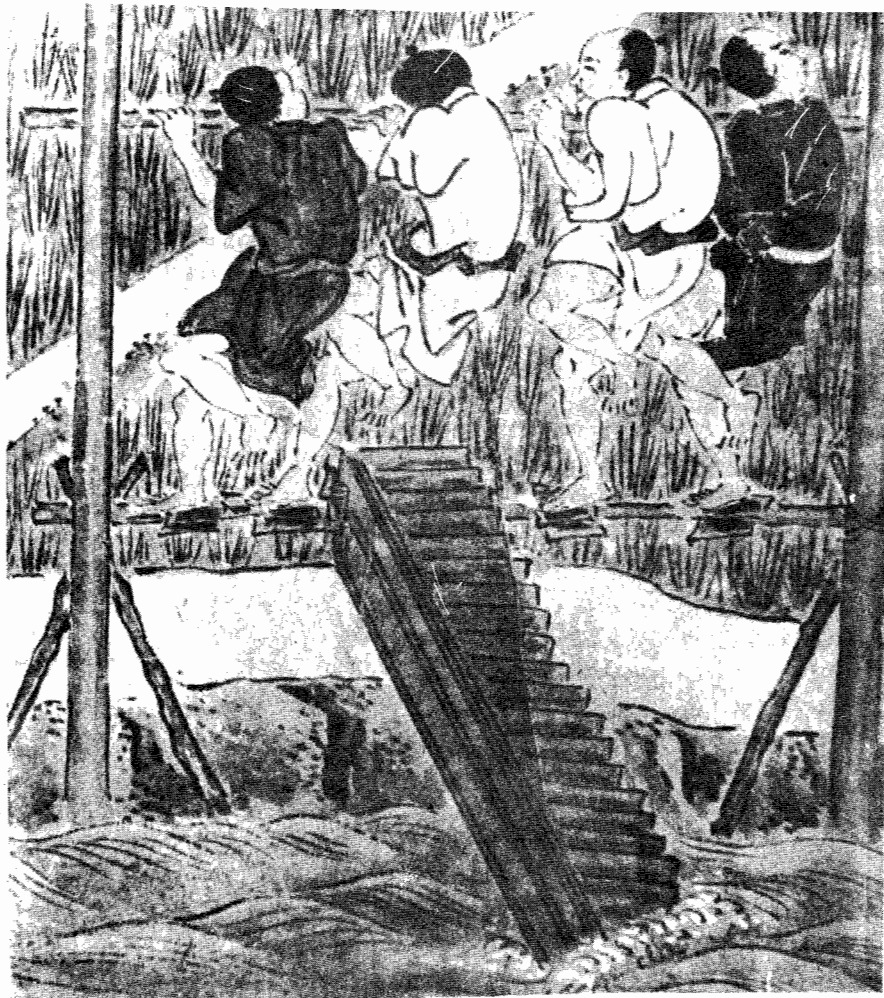
26. धान को सींचने के लिए किसान पैरों से चलाई जाने वाली मशीन का प्रयोग करते हुए पानी के स्तर को बढ़ाते हैं (मूरोमाची काल, जापान)

27. किसानों द्वारा खेत तैयार किए जाना (मूरोमाची काल)

28 धान का प्रतिरोपण करती औरतें (मूरोमाची काल)

29. चावल की भूसी को निकालती औरतें (मूरोमाची काल)

30. सबसे अधिक सम्मानित कारीगर (जापान)—तलवार बनाने वाला
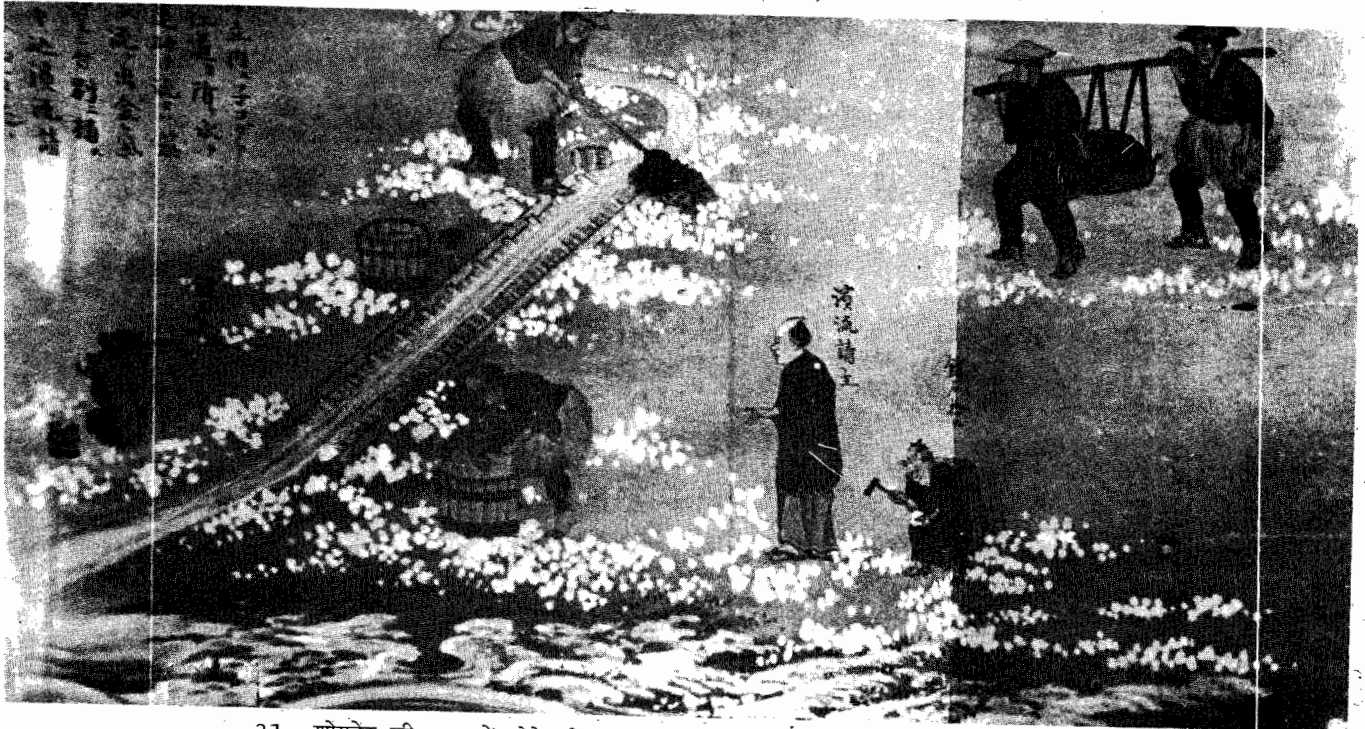
31. शोगुनेट की ख़ान में सोने की सफाई (तोकुगावा जापान)
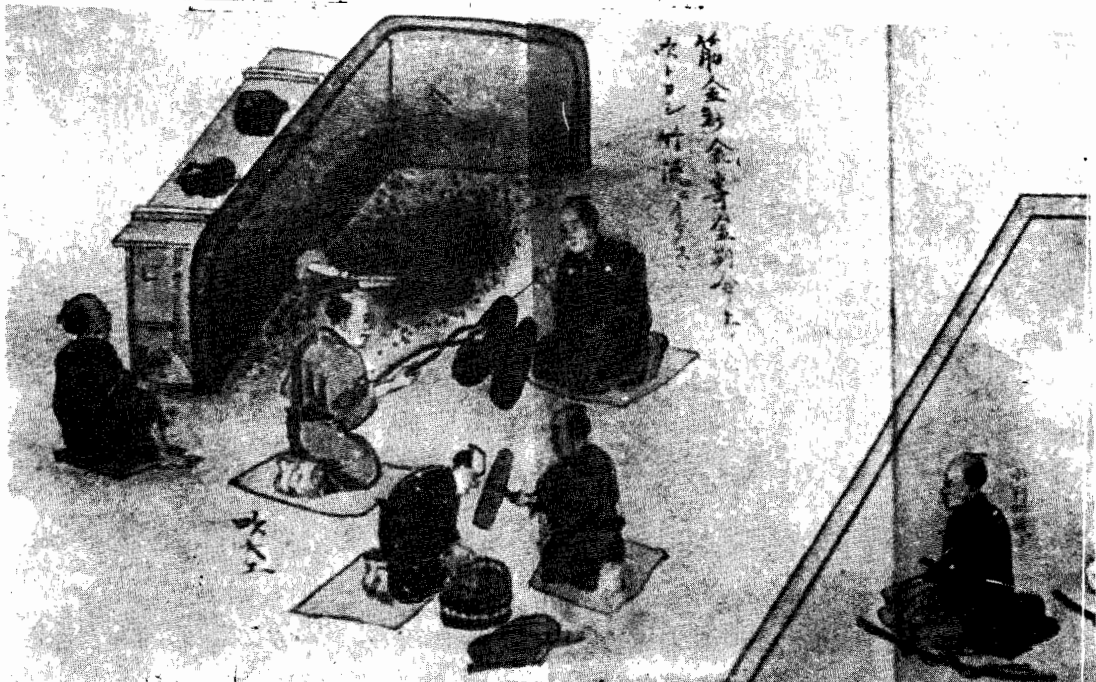
32. सोने के सिल बनते हुए (तोकुगावा जापान)
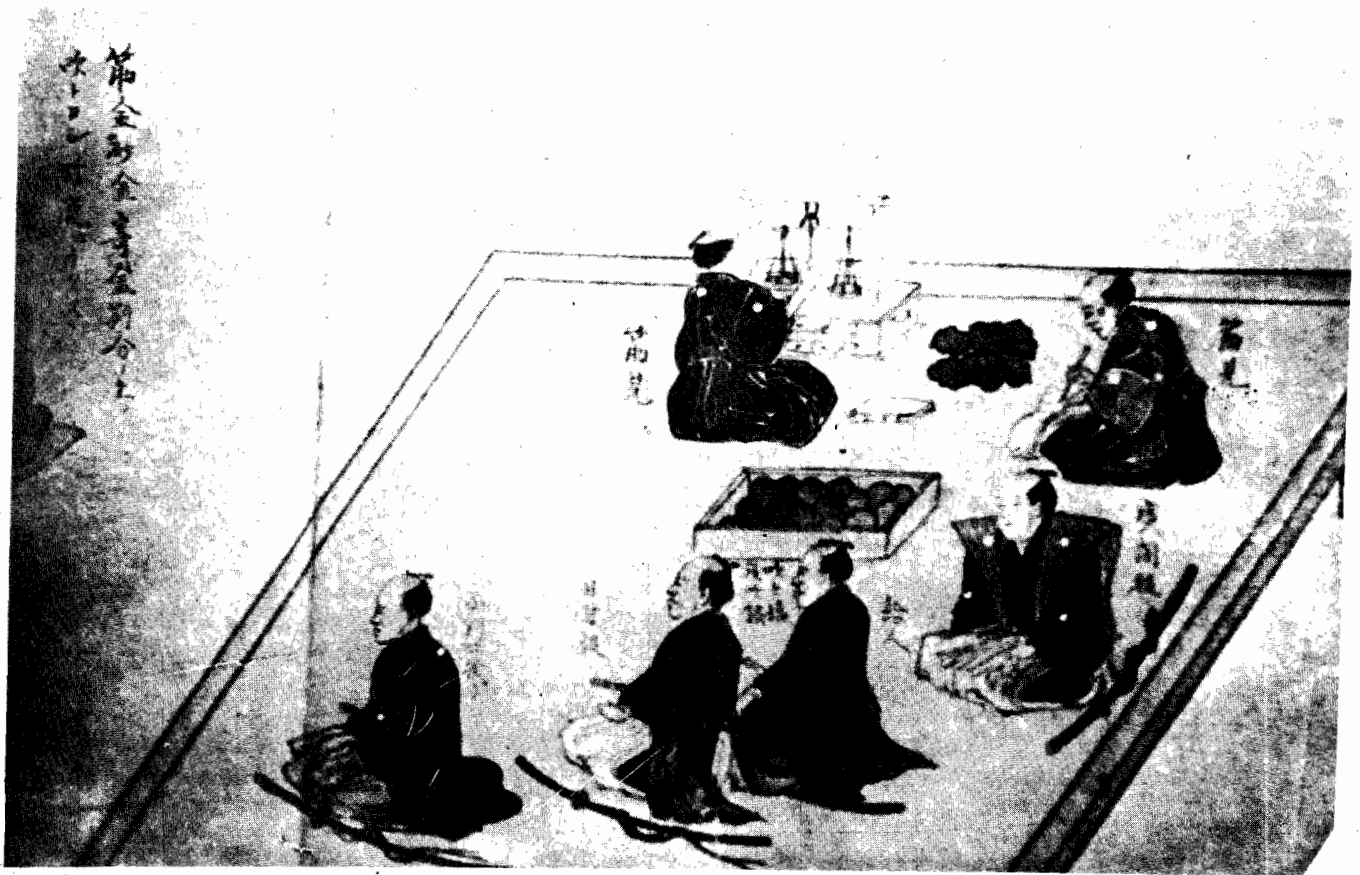
33. ओ-बान तथा को-बान के नाम से जाने जाने वाले सोने के मुहर लगाए गए तथा वज़न किए गए सिक्के

34. सोने तथा चांदी के सिक्के (जापान)

41. हीरा सूत्र (तांग काल), एक पृष्ठ तथा चित्र
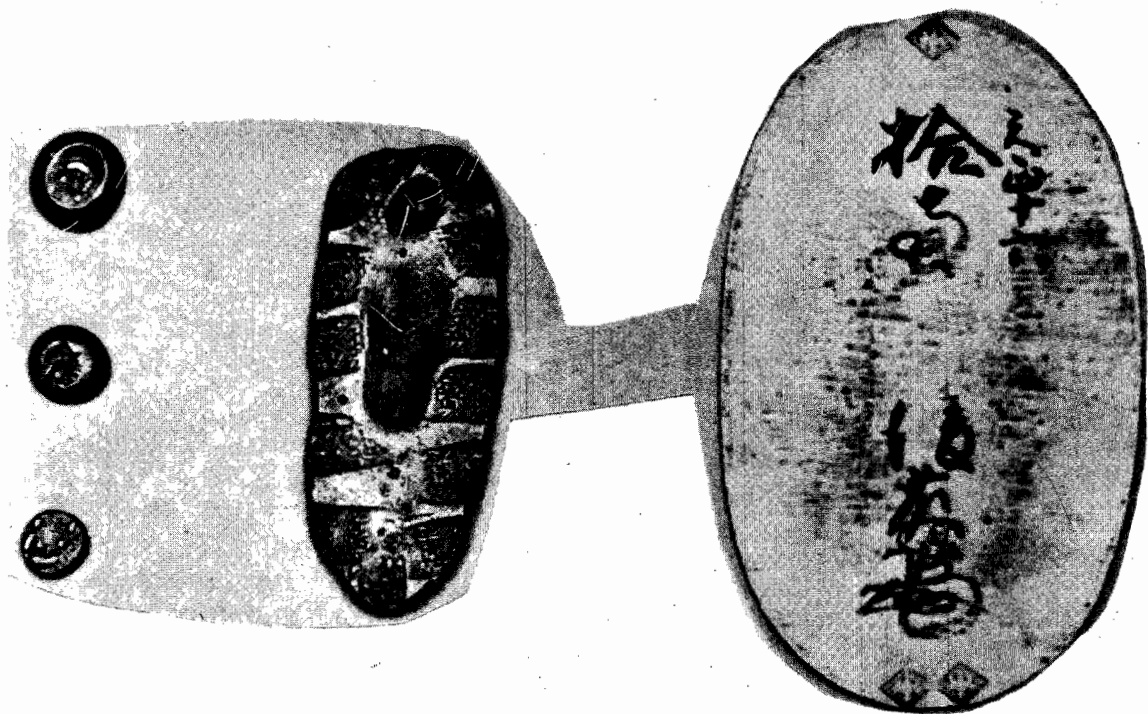
佛說是經已長老須菩提及諸比丘比丘尼優
婆塞優婆夷一切世間天人阿修羅聞佛所說
皆大歡喜信受奉行

金剛般若波羅蜜經

真言

那謨薄伽跋帝 鉢羅若 鉢羅蜜多曳

唵 伊利帝 伊失哩 輸盧駄 毗舍耶 毗舍耶

莎婆訶

咸通九年四月十五日王玠為 二親敬造普施

37. इडो में इचीगोया ड्राई (सूखे) सामान का भण्डार, 1673 (जापान)

38. ताग काल की बौद्ध प्रतिमाएँ (चीन)

39. तांग काल के स्त्री बोधिसत्व
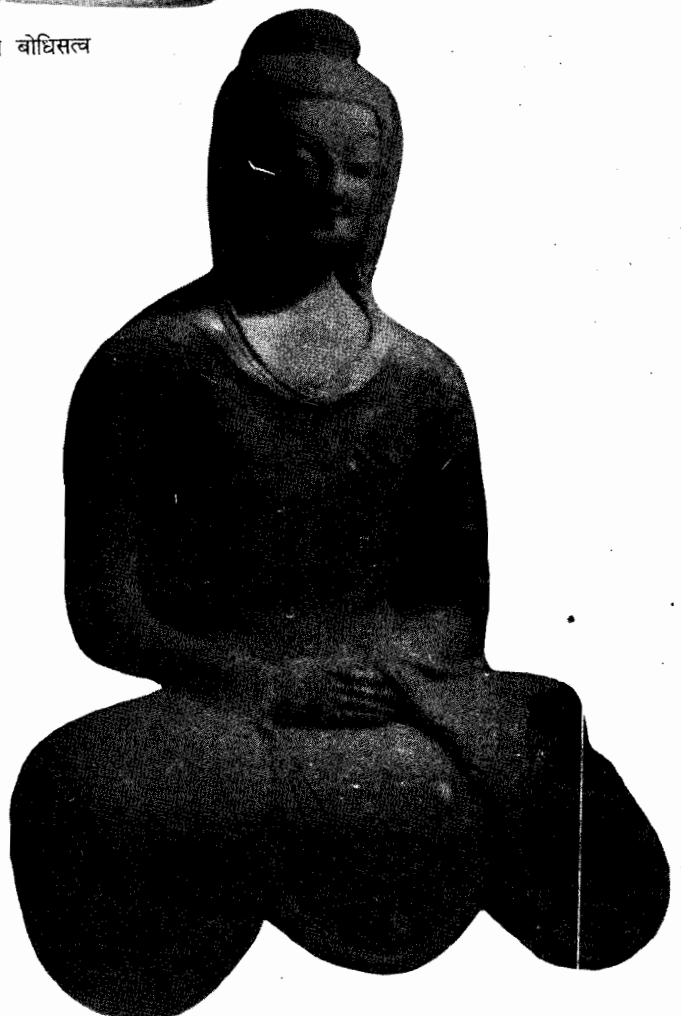
40. चीन में उत्तरी वी वंश काल की बौद्ध प्रतिमाएँ

35. बंदूक बनाने वालों की दुकान (क्योटो जापान)
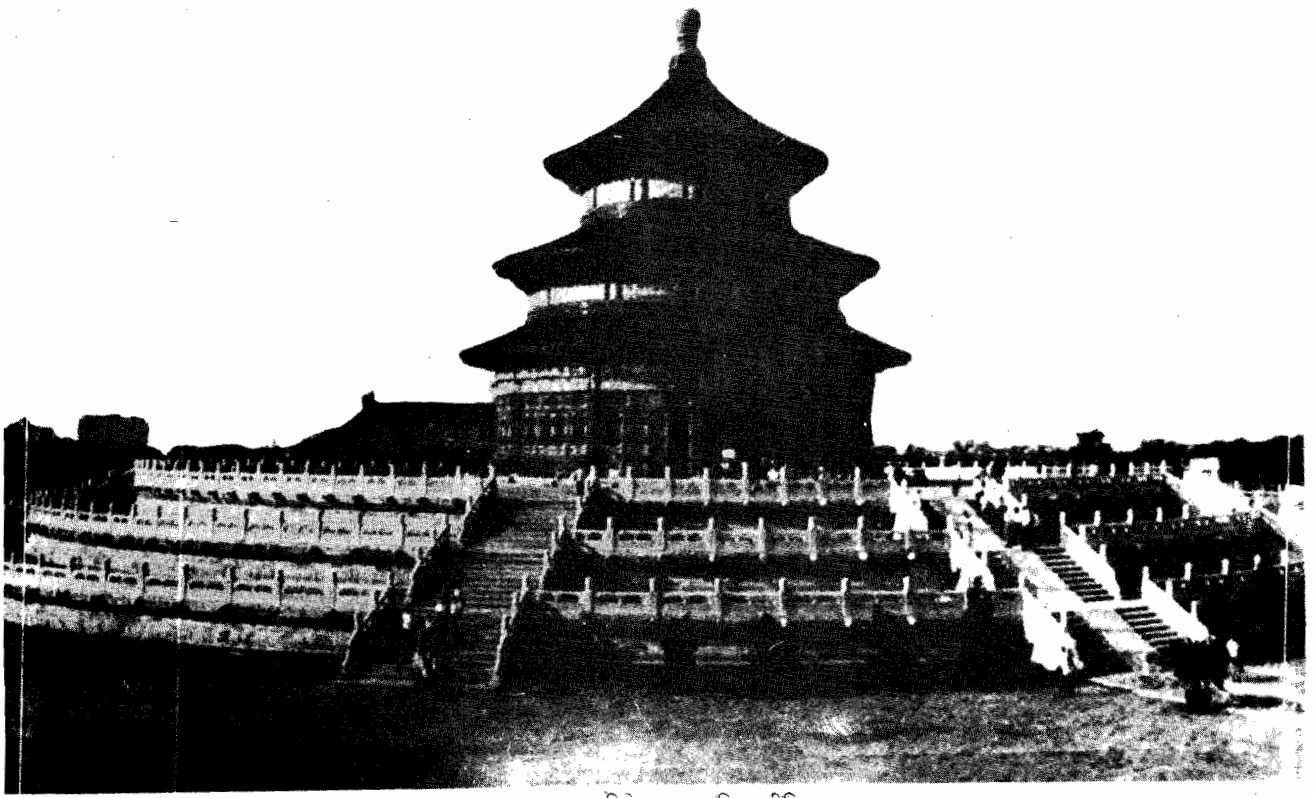
42. तियेन का मंदिर, पीकिंग
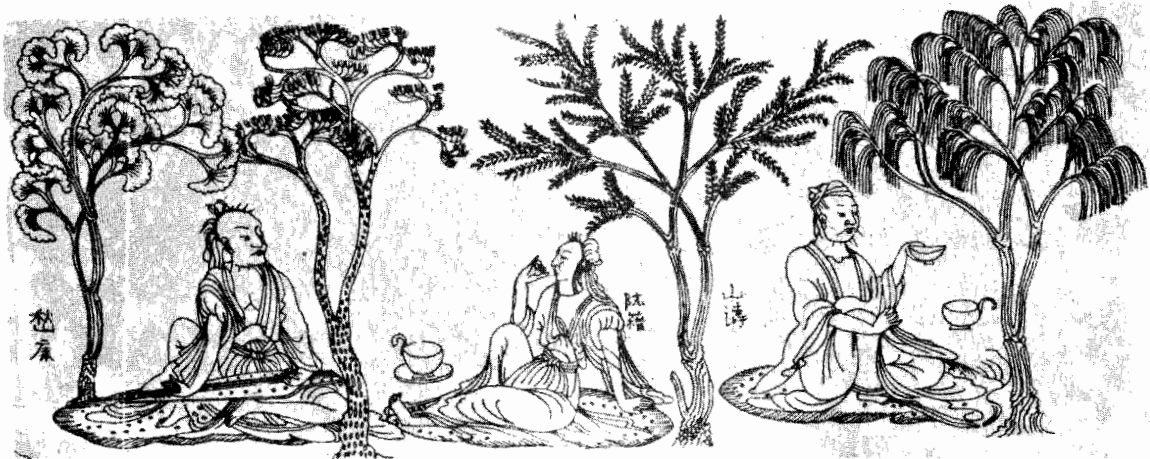
43. ताओ वाद के प्रचारक

44. यक्षी नयोराई का सिर (नारा कालीन जापान)
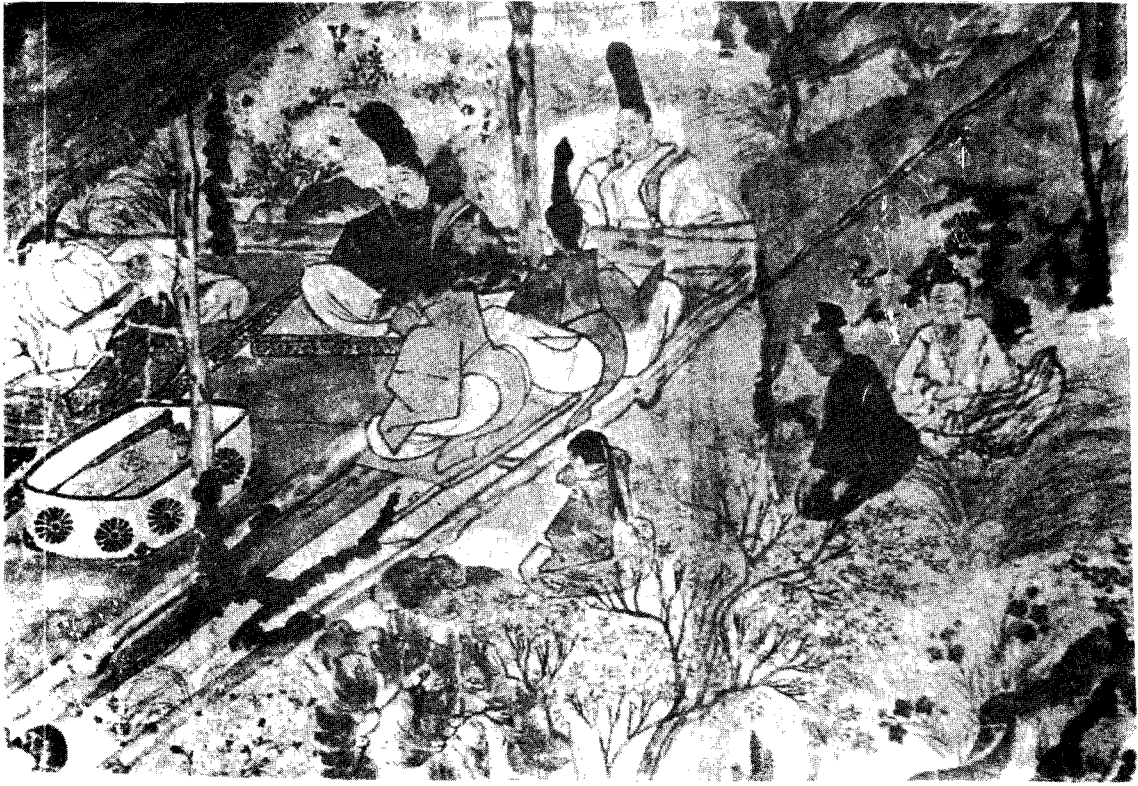
47. तेरहवीं शताब्दी की सूची जिसमें विद्वान सूगूवारा (845-903 ई.) के जीवन का चित्रण है (जापान)
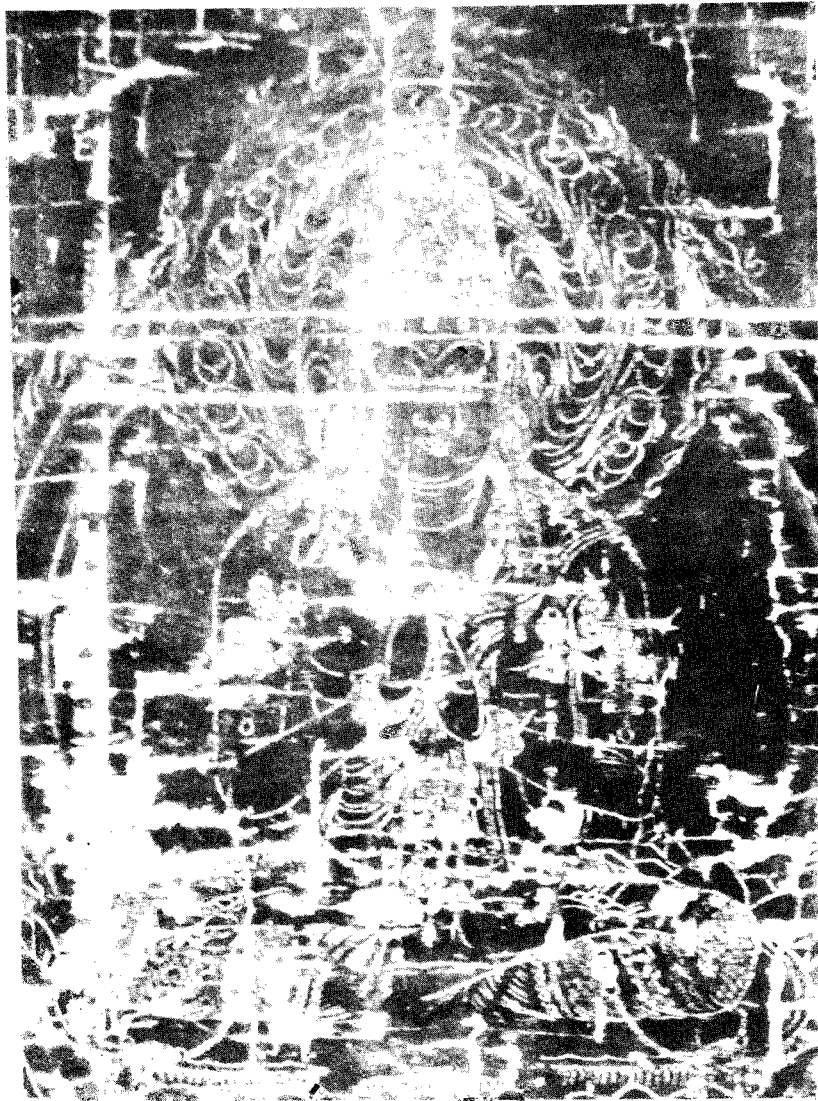
48. ताको मानदारा—बौद्ध देवताओं (जापान) की एक सुस्पष्ट श्रेणीबद्ध सारणी

49. जानवरों के व्यंग्यचित्र की सूची जिसमें इंसानों पर व्यंग्य किया गया है (जापान)

अ) अपनी पत्नी के साथ बैठे गौतम

ब) बीमार आदमी को देखते हुए गौतम
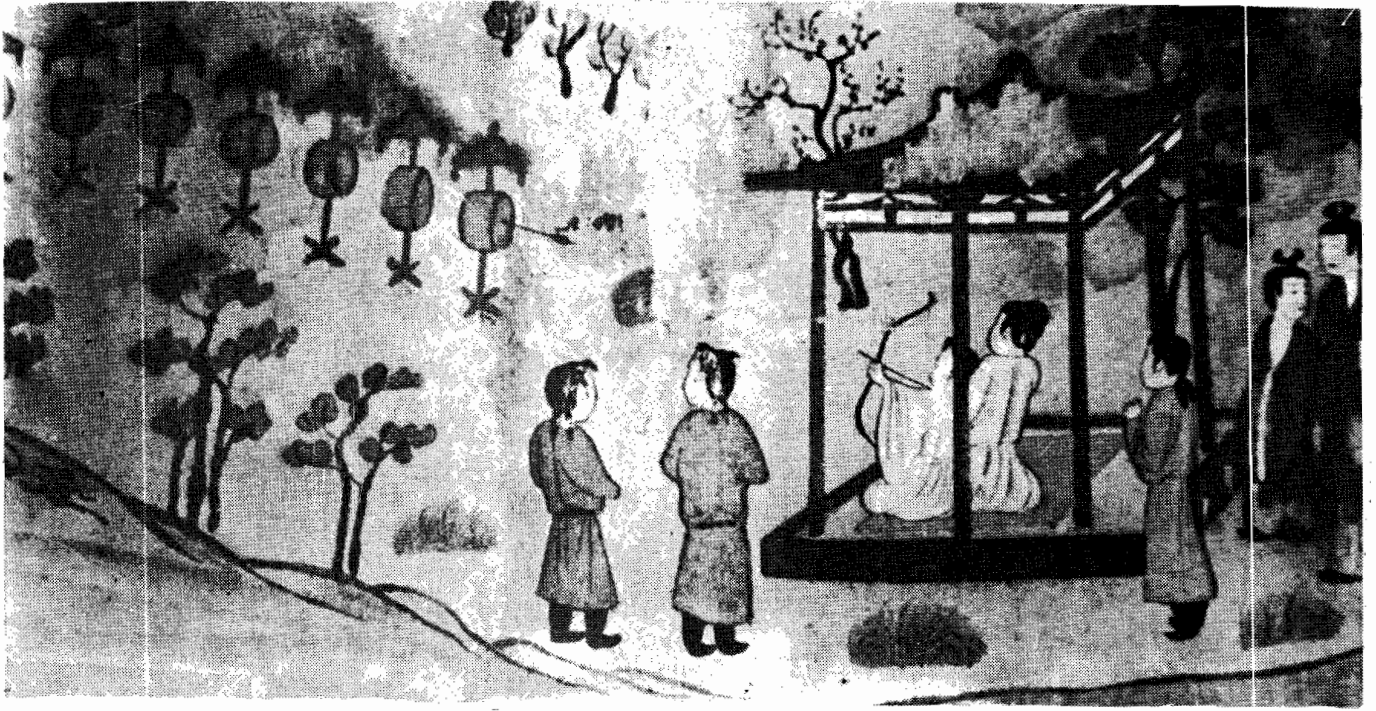
स) एक प्रवीण तीरन्दाज के रूप में गौतम

द) गौतम एक कुश्ती का अभ्यास करते हुए नौजवान के रूप में

51. क्योटो (जापान) में सत्रहवीं शताब्दी की एक खिलौनों की दुकान
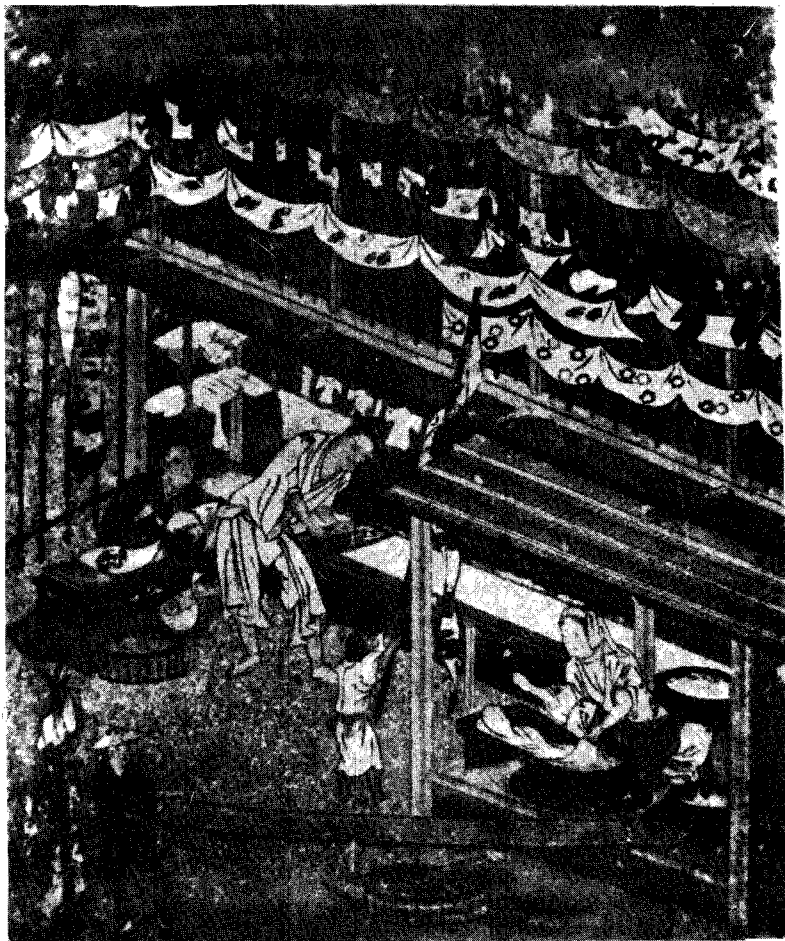
सत्रहवीं शताब्दी में जापान में व्यवसायों का चित्रण करते दो

53. जापान में चाय शिष्टाचार

54. जापान में शहरी संस्कृति : एक काबूकी नाटक

55. क्योटो में सड़क का एक दृश्य